जल, विद्युत, अवस्थापना

लघु रत्न-1

ISO 9001:2015

वाप्कोस दर्पण

अंक 103,
अक्तूबर से दिसम्बर, 2021

शेफलिन सबस्टेशन में सिविल कार्य, लाइबेरिया

क्षेत्र 1 के साथ सड़क तटबंध को सहारा देने के लिए रिटेनिंग वॉल का निर्माण, फिजी

त्बौंग खमुम और बन्तेय मीनचे प्रांत में विभिन्न स्थलों पर ड्रिलिंग प्रचालन, कंबोडिया

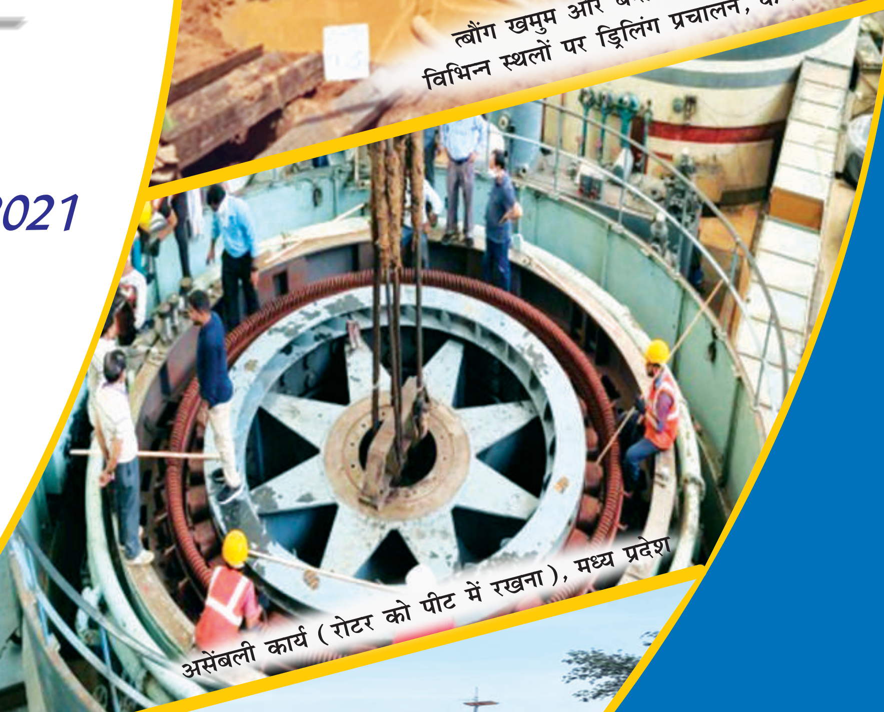

असेंबली कार्य (रोटर को पीट में रखना), मध्य प्रदेश

मुख्य नहर का दृश्य, घाना

स्वच्छता गतिविधियां

श्री पंकज कुमार, सचिव, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय और अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस व एनपीसीसी के साथ वाप्कोस अधिकारीगण श्रम दान करते हुए

श्री आर.के. अग्रवाल, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस व एनपीसीसीश्रम दान करते हुए

वाप्कोस दर्पण

अंक 103 अक्तूबर-दिसम्बर, 2021

संरक्षक
आर. के. अग्रवाल
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

सह-संरक्षक
अनुपम मिश्रा
निदेशक (वाणि. व मा.सं.वि.)
एवं अध्यक्ष, विराकास

मुख्य संपादक
प्रेम प्रकाश भारद्वाज
प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.)

संपादक
दलीप कुमार सेठी
प्रबंधक (रा.भा.का.)

उप संपादक
गीता शर्मा
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

सहयोग
शारदा रानी
वरिष्ठ सहायक

(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं। संपादन मण्डल का इसके लिए सहमत होना अनिवार्य नहीं है।)

केवल आन्तरिक वितरण हेतु

इस अंक में	पृष्ठ सं.
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की कलम से	2
सम्बोधन	3
सम्पादकीय	4
माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा वाप्कोस के कोलकाता कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण	5
वाप्कोस के नागपुर कार्यालय में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन	7
जल शक्ति मंत्रालय तथा मुख्यालय के अधिकारियों द्वारा फील्ड कार्यालयों के निरीक्षण	7
वाप्कोस के पुणे कार्यालय में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन	8
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.) गुरुग्राम की वर्ष 2021-22 की दूसरी छमाही बैठक	9
वाप्कोस गुरुग्राम कार्यालय में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन	10
विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक	11
आगे बढ़ने के लिए खुद ही कोशिश करनी होती है	12
पाहन पूजे हरि मिले – कहानी	13
मेरे ईश्वर – कविता	19
कुछ आवश्यक उपाय – स्वास्थ्य संबंधी	20
प्रेम का प्रभाव	21
सागर नियन्त्रण कानून	24
संक्षिप्त रचनाएं – कविता	27
कैप्टेन प्रेम माथुर	28
माँ – कविता	33
विजयलक्ष्मी पंडित	34
अति उत्तम अधिकारी – लेख	38
एक वरदान: स्वच्छ भारत अभियान	39
झुकने वाला व्यक्ति कभी छोटा या कमजोर नहीं होता	40
मन चंगा तो कठौती में गंगा	41
बदलाव की सबसे ज्यादा शक्ति प्रेम में ही होती है	43
राजभाषा के रूप में हिन्दी का विकास – लेख	44
पर्यावरण का शोषण नहीं, बल्कि पोषण करें – लेख	47

अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक की कलम से

यह हर्ष का विषय है कि वाप्कोस की त्रैमासिक गृह पत्रिका ''वाप्कोस दर्पण'' नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही है। सभी भारतीय भाषाओं का समृद्ध इतिहास और साहित्य है परन्तु पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का काम हिंदी ही करती है। हिंदी सदियों से भारत की एकता, संस्कृति और अंखडता की संवाहिका रही है। हमारे देश में केवल हिंदी ही ऐसी भाषा है जो अधिकांश लोगों द्वारा बोली जाती है। संविधान निर्माताओं ने इसे संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। हमें कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि राजभाषा हिंदी का प्रयोग करना और इसके प्रचार-प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देना हम सबका नैतिक कर्तव्य है।

अपनी व्यावसायिक गतिविधियों के अलावा हमें राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी भारत सरकार के निर्देशों का अनुपालन करना है। हमें अपने कार्यों के सभी क्षेत्रों में नए लक्ष्य और संकल्प निर्धारित करने होंगे। लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रत्येक चुनौती को स्वीकार करते हुए हमें समर्पित भाव से कार्य करना होगा।

वाप्कोस की त्रैमासिक गृह पत्रिका ''वाप्कोस दर्पण'' के माध्यम से कार्मिकों को अपने विचार व्यक्त करने और सृजनात्मक प्रतिभा को निखारने का सुअवसर मिलता है। मैं ''वाप्कोस दर्पण'' के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए आशा करता हूं कि हम राजभाषा हिंदी के प्रति अपने दायित्वों का सफल निर्वाह करते हुए नई उपलब्धियां प्राप्त करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

आर.के. अग्रवाल
अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक

सम्बोधन

भारत में प्राचीन काल से ही हिंदी जन-जन की भाषा रही है जो राष्ट्र की एकता के लिए एक महत्वपूर्ण कड़ी का काम कर रही है। हिंदी के कठिन शब्दों की जगह सरल व सहज हिंदी का प्रयोग हिंदी के व्यापक प्रचार में सहायक होता है।

आज संचार माध्यमों से हिंदी बड़ी तेजी से सरलीकरण की ओर बढ़ रही है। शिक्षा का क्षेत्र हो या तकनीकी क्षेत्र आज हिंदी का प्रयोग हर जगह बिना किसी झिझक के किया जा सकता है। आज हमारे कम्प्यूटर बिना किसी कठिनाई के हिंदी में काम करने में पूरी तरह सक्षम है।

राजभाषा हिंदी के सफल कार्यान्वयन के लिए यह अत्यावश्यक है कि कार्यालय का अपना अधिक से अधिक कार्य हमें हिंदी में करना चाहिए क्योंकि प्रयोग से ही भाषा सशक्त होती है। वाप्कोस में अन्य प्रभागों के साथ-साथ तकनीकी प्रभागों में भी हिंदी में कार्य करने में निरंतर वृद्धि हो रही है जो आप सभी के सहयोग से ही संभव हो पाया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि राजभाषा के विकास में आप पूरा सहयोग देंगे।

शुभ कामनाओं के साथ,

अनुपम मिश्रा

अनुपम मिश्रा

निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं

अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संपादकीय

भारत में अनेक भाषाएं बोली, लिखी व समझी जाती हैं। आज सूचना प्रौद्योगिकी, उदारीकरण और वैश्वीकरण के इस युग में भाषा, संस्कृति और साहित्य का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है। आज प्रत्येक क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग तीव्र गति से हो रहा है। हिंदी बहुत ही उदार और सरल भाषा है जिसमें बहुत लचीलापन है तथा इसमें दूसरी भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करने की अपार शक्ति है। भारत सरकार की राजभाषा नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन और सदभावना से हिंदी को आगे बढ़ाने की है।

वाप्कोस एक तकनीकी संगठन है जिसके तकनीकी प्रभागों द्वारा कार्यालय के अपने कामकाज में हिंदी का प्रयोग हिंदी के प्रचार-प्रसार में एक अमूल्य योगदान है। आज सूचना प्रौद्योगिकी के युग में हिंदी का प्रयोग व्यापक रूप से विकसित हो रहा है। गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग का यूनिकोड समर्थित हिंदी सॉफ्टवेयर इंडिक आईएमई अत्याधिक प्रचलित है जिसकी सहायता से हिंदी में आसानी से कार्य किये जा सकते हैं। यह सॉफ्टवेयर वाप्कोस के सभी कम्प्यूटरों पर अपलोड किया गया है।

जिस तरह अपने अधिकारों और दायित्वों के प्रति सजग रहना हर भारतीय का कर्तव्य है। ठीक उसी तरह राजभाषा का सम्मान करना भी प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है। राष्ट्रहित में हमें राजभाषा हिंदी के महत्व को समझना होगा। सरकारी कार्यालयों व सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में राजभाषा के प्रति पूर्ण समर्पण से कार्य करने वालों की कमी नहीं है। सब अपने-अपने तरीके से हिंदी की सेवा कर रहे हैं। आप भी हिंदी की सेवा कर अपने को भाग्यशाली समझ सकते हैं।

आप सब राजभाषा हिंदी के कार्य से जुड़े रहें इसी सदभावना के साथ में ''वाप्कोस दर्पण'' का अंक 103 आपके समक्ष रखता हूं।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

प्रेम प्रकाश भारद्वाज
प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.)

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा वाप्कोस के कोलकाता कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण

- संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 23.11.2021 को वाप्कोस के कोलकाता कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान समिति का नेतृत्व माननीय श्री मनोज तिवारी, संसद सदस्य (लोक सभा) द्वारा किया गया। निरीक्षण में संयोजक महोदय के साथ माननीय सदस्य श्री दुर्गा दास उईके, संसद सदस्य (लोक सभा) के अलावा समिति सचिवालय से डॉ. रामेश्वर लाल मीना, अवर सचिव, श्री कमल स्वरूप, अनुसंधान अधिकारी भी उपस्थित थे।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति के अभिनन्दन एवं परिचय की औपचारिकता के उपरांत श्री खादिमुल ईस्लाम, परियोजना निदेशक, कोलकाता ने वाप्कोस द्वारा की जा रही विभिन्न परियोजनाओं के संबंध में प्रस्तुतीकरण प्रस्तुत किया, जिसकी माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा सराहना की गई। तत्पश्चात् राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी स्थिति का विवरण प्रश्नावली के रूप में उप समिति के सम्मुख प्रस्तुत किया गया जिस पर समिति के सभी माननीय सदस्यों ने वाप्कोस के कोलकाता कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के समस्त पहलुओं पर विस्तार से विचार-विमर्श किया।

इस निरीक्षण कार्यक्रम में वाप्कोस कोलकाता कार्यालय, मुख्यालय व जल शक्ति मंत्रालय से निम्नलिखित अधिकारी संसदीय राजभाषा समिति के समक्ष उपस्थित थे:-

1. श्री खादिमुल ईस्लाम, परियोजना निदेशक, कोलकाता कार्यालय
2. श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.)
3. श्री दलीप कुमार सेठी, प्रबन्धक (रा.भा.का.)
4. श्री आर. सतीश, आर्थिक सलाहकार व राजभाषा प्रभारी, जल शक्ति मंत्रालय
5. श्री विजय सिंह मीना, निदेशक, (रा.भा.), जल शक्ति मंत्रालय
6. श्री एम.सी.भारद्वाज, सलाहकार, जल शक्ति मंत्रालय

वाप्कोस के कोलकाता कार्यालय द्वारा प्रस्तुत की गई निरीक्षण प्रश्नावली के आधार पर समिति के सदस्यों द्वारा वाप्कोस के कोलकाता कार्यालय में हिंदी में किये जा रहे कार्यों की सराहना भी गई।

अंत में परियोजना निदेशक, कोलकाता ने राजभाषा के उत्तरोत्तर विकास हेतु सार्थक विचार-विमर्श के लिए समिति सदस्यों का धन्यवाद किया तथा दिये गए दिशानिर्देशों के अनुपालन का आश्वासन दिया।

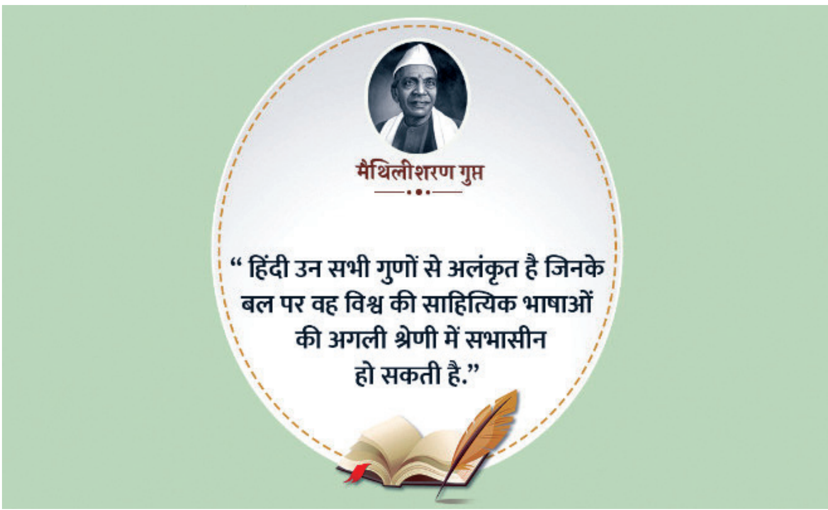

वाप्कोस के नागपुर कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

वाप्कोस के नागपुर कार्यालय में दिनांक 26.12.2021 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला में जल शक्ति मंत्रालय के श्री विजय सिंह मीना, निदेशक (रा.भा.) द्वारा कार्यशाला में उपस्थित सभी कार्मिकों को राजभाषा नियमों व अधिनियमों की जानकारी दी गई।

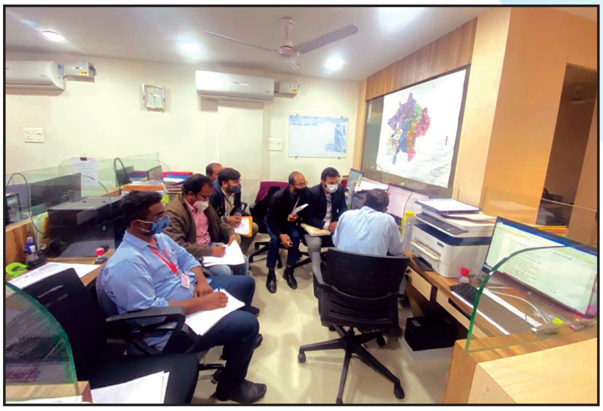

निदेशक (रा.भा.) द्वारा सभी कार्मिकों को वाइस टाइपिंग का प्रशिक्षण भी दिया गया। इसके साथ-साथ उन्होंने कार्मिकों को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वर्ष 2021-22 के वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए निर्धारित लक्ष्यों के बारे में विस्तृत से जानकारी भी दी।

जल शक्ति मंत्रालय तथा मुख्यालय के अधिकारियों द्वारा फील्ड कार्यालयों के निरीक्षण

- जल शक्ति मंत्रालय, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग के श्री विजय सिंह मीना, निदेशक (रा.भा.) द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की स्थिति का जायजा लेने हेतु वाप्कोस के नागपुर परियोजना कार्यालय का दिनांक 26.12.2021 को राजभाषाई निरीक्षण किया गया।
- दिनांक 28.12.2021 को जल शक्ति मंत्रालय, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग के श्री विजय सिंह मीना, निदेशक (रा.भा.) द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की स्थिति का जायजा लेने हेतु वाप्कोस के पुणे कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।
- राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थिति का जायजा लेने हेतु श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.) द्वारा दिनांक 28.12.2021 को वाप्कोस के पुणे कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

वाप्कोस के पुणे कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

- वाप्कोस के पुणे कार्यालय में दिनांक 28.12.2021 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जल शक्ति मंत्रालय के श्री विजय सिंह मीना, निदेशक (रा.भा.) द्वारा कार्यशाला में उपस्थित सभी कार्मिकों को राजभाषा नियमों व अधिनियमों की जानकारी दी तथा वाइस टाइपिंग का प्रशिक्षण भी दिया।

- इसके अलावा निदेशक (रा.भा.) द्वारा कार्मिकों को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वर्ष 2021-22 के वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए निर्धारित लक्ष्यों के बारे में जानकारी भी दी गई। इस हिन्दी कार्यशाला में वाप्कोस मुख्यालय से श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.) भी उपस्थित थे जिन्होंने कार्यशाला में उपस्थित कार्मिकों का काफी उत्साहवर्धन किया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.) गुरुग्राम की वर्ष 2021-22 की दूसरी छमाही बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.) गुरुग्राम की वर्ष 2021-22 की दूसरी छमाही बैठक श्री आर.के. अग्रवाल, अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक, वाप्कोस एवं अध्यक्ष, नराकास, गुरुग्राम की अध्यक्षता में दिनांक 24.12.2021 को 12.00 बजे माइक्रोसाफ्ट टीम पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित की गई।

बैठक में नराकास, गुरुग्राम के सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख या उनके प्रतिनिधि तथा उनके साथ हिन्दी अधिकारी भी आनलाइन उपस्थित थे। बैठक में श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वाणिज्य व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास, वाप्कोस तथा गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 (दिल्ली) के उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री कुमार पाल शर्मा भी आनलाइन उपस्थित थे।

सबसे पहले श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.) तथा सदस्य सचिव, नराकास, गुरुग्राम द्वारा बैठक में आनलाइन उपस्थित सभी कार्यालय प्रमुखों/प्रतिनिधियों व राजभाषा अधिकारियों तथा उप निदेशक (कार्यान्वयन) का हार्दिक स्वागत किया गया। तत्पश्चात उन्होंने नराकास, गुरुग्राम के नये अध्यक्ष, श्री आर.के. अग्रवाल जी का हार्दिक स्वागत करते हुए सभी सदस्य कार्यालयों को उनका संक्षिप्त परिचय करवाया। अध्यक्ष महोदय की अनुमति से श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, सदस्य सचिव, नराकास, गुरुग्राम एवं प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.) द्वारा बैठक की विभिन्न मदों पर विधिवत् रूप से चर्चा की गई।

बैठक में अध्यक्षीय कार्यालय वाप्कोस लिमिटेड द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा हिंदी में किये जा रहे कार्यों की अलग-अलग पीपीटी बनाकर दिखाई गई जिसकी उप निदेशक (कार्यान्वयन) व सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा सराहना भी की गई।

वाप्कोस गुरुग्राम कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

- वाप्कोस में गुरुग्राम कार्यालय के समिति कक्ष में दिनांक 24.12.2021 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला में जल शक्ति मंत्रालय के श्री विजय सिंह मीना, निदेशक (रा.भा.) को आमंत्रित किया गया। श्री विजय सिंह मीना जी ने हिंदी कार्यशाला में उपस्थित सभी कार्मिकों को वाइस टाइपिंग का प्रशिक्षण दिया।

- वाइस टाइपिंग का प्रशिक्षण देने के उपरान्त उन्होंने सभी कार्मिकों को राजभाषा नियमों व अधिनियमों के बारे में जानकारी दी। इसके साथ-साथ उन्होंने कार्मिकों को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वर्ष 2021-22 के वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए निर्धारित लक्ष्यों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि इन लक्ष्यों को प्राप्त करना सभी कार्मिकों की जिम्मेदारी है।

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

दिसम्बर 2021 को समाप्त तिमाही के अन्तर्गत विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की एक बैठक करवाई जानी अपेक्षित होती है। इसी अनुक्रम में दिनांक 21.12.2021 को वाप्कोस की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

उक्त बैठक में समिति के निम्नलिखित सदस्यों/ प्रतिनिधियों ने भाग लिया:-

क्र. सं.	नाम व पदनाम सर्वश्री/श्रीमती/कुमारी	प्रभाग का नाम
1.	वजाहत अली सिद्दीकी, प्रबंधक	सतर्कता प्रभाग
2.	शशि तापसी, अभियंता	बांध व जलाशय प्रभाग
3.	नेहा अमर्या, अभियंता	सिविल डिजाइन
4.	सौरभ मंदिलवाल, अभियंता	इलै.-मैकेनिकल प्रभाग
5.	संगीता झा, प्रबंधक	हाइड्रो-पावर
6.	विजय कुमार गौतम, उप प्रबंधक	निर्माण प्रबंधन प्रभाग
7.	गोकुल प्रजापति, अभियंता	प., बं. व अं.ज. मार्ग
8.	सतीश चन्द, प्रबंधक	कार्मिक प्रभाग
9.	हरीश कुमार, अभियंता	जल संसाधन विकास
10.	राजेन्द्र कुमार, उप प्रबंधक	कार्मिक
11.	वोनिशा, वरि. अभियंता	आई.टी. प्रभाग
12.	सान्या मेहता, सहायक प्रबंधक	आई.टी. प्रभाग
13.	धीरेश यादव, अभियंता	पर्यावरण प्रभाग
14.	अक्षय, सहायक प्रबंधक	प्रशासन प्रभाग
15.	विकास वर्मा, परियोजना सहायक	अवस्थापना प्रभाग
16.	प्रेम प्रकाश द्विवेदी, वरि. सहायक	पी. एण्ड डी. प्रभाग (वित्त प्रभाग)
17.	उर्वशी बिष्ट, कार्यालय सहायक	जल प्रबंधन प्रभाग
18.	गीता शर्मा, उप प्रबंधक	हिन्दी अनुभाग
19.	दलीप कुमार सेठी, प्रबंधक	हिन्दी अनुभाग
20.	प्रेम प्रकाश भारद्वाज प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.) एवं सदस्य सचिव	हिन्दी अनुभाग

हमेशा हिन्दी में पत्र-व्यवहार करके देश का गौरव बढ़ायें

आगे बढ़ने के लिए खुद ही कोशिश करनी होती है

एक दिन एक लड़का साइकिल से कहीं जा रहा था। अचानक उसका एक पहिया रास्ते में पड़े एक पत्थर से टकरा गया और वह गिर पड़ा। वह झुंझलाकर उठा और उस पत्थर की ओर देखकर उसे सड़क पर डालने वाले अनजान इंसान को गालियां देने लगा। गुस्से में उसने पत्थर पर अपने पैर से एक जोरदार ठोकर भी मार दी। उसका वह पैर घायल हो गया। वह पत्थर की ओर हिकारत से देखकर गालियां दिए जा रहा था। उसने यह नहीं सोचा कि उसके ऐसा करने से न तो उस पत्थर को कोई फर्क पड़ रहा था और न ही उसे वहां डालने वाले को। हां, वह लड़का अपनी जुबान और मूड जरूर खराब किए जा रहा था। राह चलते लोग भी उस पर हंसे जा रहे थे।

तभी उधर से गुजरता हुआ एक आदमी पास आकर बोला- "भैया, गलती तो आपकी भी है। माना कि सड़क पर पत्थर फेंकने वाले ने बड़ी गलती की है, लेकिन आपने भी तो बीच रास्ते पर पड़े इस पत्थर को अनदेखा करके उसी गलती को दुहरा दिया है।" यह सुनकर लड़के ने उसे भी अनाप-शनाप कहना शुरू कर दिया।

आम जिंदगी में अक्सर यही स्थिति हममें से बहुतों की होती है। हम अपनी संकीर्णताओं से बाहर निकलने के बजाय दूसरे लोगों में कमियां खोजते रहते हैं। अपनी योग्यता को पहचानकर हम आगे बढ़ने की जगह दूसरों के दोषों को कुरेद कर उनकी जड़ें काटने में अपना वक्त खराब करते रहते हैं। नतीजा यह होता है कि न तो परिस्थितियां बदलतीं हैं और न ही हम अपना विकास कर पाते हैं।

इस घटना से हमें एक बड़ी सीख मिलती है कि मनुष्य परिस्थितियों पर अपना जोर नहीं चला सकता। लेकिन यदि वह अपने गुणों के विकास में लग जाए तो विपरीत परिस्थितियों को भी अपने पक्ष में कर सकता है। हम ये उम्मीद करें कि दूसरे लोग हमारी सुविधा के लिए मार्ग प्रशस्त करेंगे तो यह सोचना गलत है। सच यही है कि हर मनुष्य को अपने लिए खुद ही कोशिश करनी होती है। दूसरे लोग तो उसे राह दिखा भर सकते हैं, उस राह पर चलना और खुद को साबित करना उसका अपना दायित्व हो जाता है। उसे अपना प्रगति रूपी मार्ग खुद ही बनाना पड़ेगा और राह में आने वाली ठोकर रूपी रुकावटों से खुद ही लड़ना होगा।

यदि यही साइकिल सवार पत्थर से टकराने के बजाय सचेत होकर चलता तो उसकी सजगता की जीत होती। वह अपशब्द न बोलता तो उसकी सहनशीलता की जीत होती। वह अपने ही हाथों रास्ते पर पड़े उस उस पत्थर को उठाकर सड़क के किनारे रख देता तो उसकी इंसानियत की जीत होती। इससे उसे यह संतुष्टि भी होती कि उसने आने वाले लोगों का भी मार्ग प्रशस्त किया है।

पाहन पूजे हरि मिले

बैसाख लगभग खत्म हो चुका था और दिनभर चिलचिलाती धूप से जंगल का सूनापन बढ़ गया था। दूर-दूर तक नंगे खेत और उनमें खड़े नीम व पीपल के बड़े पेडों के नीचे बैठे मवेशी गर्मी से बचने की नाकाम कोशिश करते दिखाई देते थे। इन दिनों में गांव वाले अक्सर पशुओं को खुला ही छोड़ देते हैं और शाम होने पर उन्हें वापस हांक ले जाते हैं। शाम को आये दिन धूलभरी आंधियों से रात होने का अंदेशा सा होने लगता है। गांव में दिन में लोग इस मौसम में या तो ताश खेलते रहते हैं या फिर छप्पर अथवा किसी बड़े पेड़ के नीचे खाट बिछाकर सोते रहते हैं।

दोपहरी ढ़ल चुकी थी। रज्जू अलसाई आंखों से उठा, अपनी जूती पहनी और हाथ में लाठी लेकर अपनी भैंसों को ढूढ़ने जंगल की ओर चल पड़ा। गांव पार कर वह पहाड़ की तलहटी में आ गया। तलहटी में उसका एक खेत भी था जिसमें इस बार पानी की कमी के कारण कुछ भी पैदा नहीं हुआ था। ले देकर उसका गुजारा भैंसों का दूध बेचकर ही हो रहा था। उसने एक बार सरसरी-सी नजर अपने सूने खेत पर डाली और फिर टकटकी लगाकर पहाड़ की ओर देखने लगा। मन ही मन कुछ बुदबुदाया और अनायास ही उसके चेहरे पर खुशी के रेखाचित्र बनने-बिगड़ने लगे। धीरे-धीरे वह पहाड़ की तलहटी के उस हिस्से की तरफ बढ़ने लगा जिसका एक सिरा उसके खेत से मिला हुआ था। पास में ही एक बड़ा-सा शिलाखंड़ पड़ा था। उसके आस-पास उसने दृष्टि दौड़ाई और एक स्थान पर अपनी लाठी का एक सिरा टिका दिया।

कुछ समय तक रज्जू उस शिलाखंड़ पर बैठा सोचता रहा। अकाल के इस समय में उसके सारे घर का खर्च भैंसों का दूध बेचकर ही चल रहा था। वहां से वह उठकर पहाड़ पर गया और दो-तीन अनगढ़ पत्थर उठा लिए। वह एक नुकीला पत्थर लेकर बाकी पत्थरों पर चोट मारकर उन पर कुछ आढ़ी-तिरछी रेखा बनाने लगा। थोडी देर में उन पत्थरों को पीट-पीट कर उन पर कुछ अस्पष्ट-सी आकृतियां उभर आई। रज्जू ने उन पत्थरों को उठाया और उन्हें बडे वाले शिलाखंड़ के पास लाकर रख दिया। उसके बाद वह अपनी भैंसो को लेकर वापस अपने घर आ गया।

रात्रि का दूसरा प्रहर ढ़ल चुका था। गांव में सन्नाटा छाया हुआ था। सभी लोग नींद के आगोश में समा चुके थे। ऐसे में रज्जू ने अपनी लाठी उठाई और साथ में एक तेल की बोतल और सिंदूर आदि सामान लेकर घर से निकल पडा। वहां से सीधे वह अपने खेत में पडे शिलाखंड़ के पास पहुंचा। उसने कटोरे में तेल और सिंदूर मिलाया तथा उससे शिलाखंड़ के पास पडे पत्थरों को रंगने लगा। इसके बाद उसने शिलाखंड़ के नीचे एक गहरा गड्ढा खोदा और उन अस्पष्ट आकृतियों वाले पत्थरों को उसमें गाढ़ दिया। गड्डे को इस तरह भर दिया जैसे पहले कुछ था ही नहीं। उसके उपर पत्थरों के छोटे छोटे टुकडे बिछा दिये।

दस दिन बाद, एक रोज रज्जू सुबह-सुबह बिस्तर से उठा और अपने लड़के भजन को कहा कि पूरे गांव को इकट्ठा करो। भजन ने थोडी ही देर में सारे गांव को यह

सूचना दे दी कि आज हमारे यहां किसी जरुरी काम के लिए गांव के सभी भाई पहुंच जाएं। दिन के बारह बजे तक समूचा गांव रज्जू की तिबारी पर एकत्रित हो गया।

गांव वालों ने रज्जू से इसका कारण जानना चाहा।

"रज्जू कहने लगा-"

"मुझे पिछले तीन दिन से हनुमानजी सपने में दर्शन दे रहे हैं। वे मुझसे बार-बार एक ही बात कहते हैं।" रज्जू ने गांव वालों से कहा।

"क्या बात कहते हैं।" गांव के बुजुर्ग भरत लाल ने पूछा।

"उन्होंने कहा है कि पहाड़ की तलहटी में जहां तुम्हारा खेत है, उसमें पडे हुए शिलाखंड़ के पास मेरी मूर्तियां दबी हुई हैं। तुम उन्हें निकाल कर स्थापित कर उस पर दूध चढ़ाओ तो तुम्हारे गांव से अकाल की परेशानी दूर हो सकती है।" सुनकर सभी गांव वालों में खुसर-फुसर होने लगी। चारों ओर इसी बात की चर्चा होने लगी। आखिरकार गांव के बुजुर्ग भरत लाल ने कहा- "ठीक है, हम आज ही मूर्ति की खोज चालू कर देते हैं।

सभी गांव वालों ने इस पर सहमति जताई और गांव का हुजुम रज्जू के खेत की ओर चल दिया। गर्मी ने भी अपनी प्रचंड़ता दिखानी शुरू कर दी थी लेकिन यहां सवाल आस्था और गांव के समक्ष उपजी अकाल की कठिनाईयों से छुटकारा पाने का था। सबसे आगे रज्जू चल रहा था। खेत पर पहुंचकर वह शिलाखंड़ के समीप जाकर रुक गया। उसने सबसे पहले शिला की परिक्रमा की और कहा-

"मुझे सपने में अस्पष्ट रूप से इसी शिलाखंड़ के आस पास तीन मूर्तियां दिखाई देती थी।" रज्जू ने पसीना पोंछते हुए कहा। सभी रज्जू की तरफ टकटकी लगाए देख रहे थे। उसने तपते शिलाखंड़ पर एक सरसरी-सी नजर दौड़ाई और कहा- "इसके चारो ओर खुदाई चालू करवा दो।" कहकर उसने लाठी से उसके चारो ओर एक गोलाकार लकीर खीची। गांव के कुछ नवयुवक उसी गोले के अनुरुप फावडे और कुदालों से खुदाई करने लगे।

सबसे पहले शिला के पिछले वाले हिस्से को खोदा गया, परंतु वहां कुछ नहीं मिला। फिर दाईं व बाईं ओर खुदाई की गई परन्तु परिणाम शून्य रहा। जमीन पथरीली थी सो खुदाई करने वाले भी बेजान होते जा रहे थे। चारों ओर निराशा नजर आ रही थी। खुदाई का काम बंद कर युवक सुस्ताने लगे।

जब वहां कुछ नही मिला तो कुछ मनचले लोगो ने रज्जू पर फब्तियां कसनी शुरू कर दी। उनमें से एक था गुटेरी, उसने कहा- "हम तो पहले ही कह रहे थे कि रज्जू सारे गांव को बेवकूफ बना रहा है। सही बात तो ये है कि हर साल खेत जोतते समय इस शिला से जोतने में बड़ी दिक्कत आती है सो इसी बहाने मुफ्त में खुदाई करवाकर ये इसे यहां से हटवाने के लिए ही सारा प्रपंच रच रहा है।" गुटेरी की बात सुनकर उसके जैसे कई लोग हंसने लगे। सुनकर रज्जू ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। वह तो बस टकटकी लगाकर शिला के अगले हिस्से को देख रहा था। गांव का ही मनोविनोदी किस्म का व्यक्ति घम्मा कहने लगा- "जिंदगी में इसने कभी हनुमानजी को पांच रुपये का प्रसाद भी नहीं चढ़ाया और इसे हनुमानजी सपने में दर्शन देंगे। कई-कई दिन तक तो ये नहाता भी नहीं है। इसे दर्शन देते वक्त हनुमानजी तो बेहोश ही हो गये होंगे। बेकार में ही सारे गांव को गर्मी में झुलसा रहा है।" कहकर घम्मा ने ठहाका लगाया।

बीच में ही काडा पटैल ने उन्हें ललकारा और शांत रहने को कहा। "ये फालतू की बातें बंद करो और आगे खुदाई चालू करो। अभी खुदाई का काम पूरा नही हुआ है जो इस तरह के कयास लगाने लग गये।" सुनते ही युवक शिला के अगले हिस्से के पास खुदाई करने लगे।

थोडी ही देर में दो तीन हाथ खुदाई करने के बाद उन्हें कुछ लाल सी वस्तु नजर आई। उस जगह की मिट्टी उन्होंने हाथ से हटाई तो तीन लाल रंग से पुते पत्थर मिल गये। देखते ही युवकों ने जोर से हर्षध्वनि की और जै बजरंगबली के जयकारे लगाने लगे। वहां उपस्थित सभी लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई और वातावरण बजरंग बली की जयकार से प्रतिध्वनित होने लगा।

काडा पटैल ने आदेश दिया कि आज मंगलवार है और मूर्तियों की स्थापना आज ही करनी होगी। जल्दी से गांव के पंडितजी को बुलाओ और तुरंत मंदिर से गंगा जल व पूजा की अन्य सामग्री की व्यवस्था करो। थोडी ही देर में यह समाचार आग की तरह गांव में फैल गया। गांव के नर-नारी, बूढ़े-बच्चे भाग-भाग कर रज्जू के खेत की तरफ आ रहे थे। धीरे-धीरे यह समाचार आस-पास के आठ दस गांवों तक फैल गया और लोग वहां एकत्रित होने लगे। धीरे-धीरे वहां एक मेला सा लग गया।

शिला के पास ही एक कच्चा चबूतरा बनाया गया जिस पर पंडित जी ने हनुमान चालीसा की कुछ पंक्तियां बोलकर उन तीनो पत्थरों को स्थापित कर दिया। चूंकि रज्जू को सपने में दर्शन दिए थे सो उनकी पूजा का मुख्य पुजारी उसे ही नियुक्त कर दिया। यह बात पंडित जी को कुछ अच्छी नहीं लगी परंतु गांव के सामने वह बेबस था। रज्जू के कहे अनुसार सभी अपने-अपने घरों से दूध ला लाकर मूर्ति पर चढ़ाने लगे। चारों ओर भजन कीर्तन की आवाजें लाउड़स्पीकरों पर गूंजने लगी। जितने मुंह उतनी ही बातें। कोई कह रहा था कि मेरे बच्चे को पांच दिन से बुखार था। मूर्ति के दर्शन करते ही बुखार छूमंतर हो गया। कई लोग तो यहां तक कहते सुने गये– "मैंने जैसे ही मूर्ति पर दूध चढ़ाया तो मेरी भैंस ने और दिन के मुकाबले आज दुगुना दूध दिया।"

मूर्तियों के साथ-साथ रज्जू को भी इन लोगों ने अवतारी और सिद्ध पुरुष बना दिया। खासकर औरतों ने इसमें आग में घी का काम किया। गांव की नाराणी कह रही थी" "मेरी बहू को चार दिन से पेट में दर्द था। वह भी इतना भयंकर कि चल फिर भी नही सकती थी। रज्जू बाबा ने जैसे ही उसके सिर पर हाथ फेरा, सारा दुख भाग गया। उसी दिन से भली-चंगी घर का सारा काम-काज कर रही है।"

"तुम सच कह रही हो नाराणी। बाबा के शरीर में बालाजी निवास करते हैं। पिंटू के पापा भी कह रहे थे कि रात को रज्जू बाबा हनुमानजी से साक्षात बात करते हैं।" बीजणे से हवा करते हुए कपूरी कह रही थी। इसी तरह बातें बढ़ती गई और दो दिन में ही यह समाचार पूरे जिले में फैल गया।

रज्जू का खेत मुख्य सड़क से चार किलोमीटर की दूरी पर था। दर्शन करने वाले दूर-दूर से आने लगे तो गांव में जितनी भी जीप, किसान बुग्गी, ट्रेक्टर ट्राली, ऊंटगाडी इत्यादि साधन थे सभी वहां से सवारियां ढोने में लगा दिये गये। किराया भी वे अच्छा वसूल रहे थे। इधर मूर्ति पर दूध चढ़ाना जरुरी था सो गांव वालो ने अपनी भैंसो का दूध निकालकर वहां बेचने की दुकान लगा ली। देखते ही देखते रज्जू का सारा खेत फल, फूल, दूध, मिठाई और खाने के ढाबों में तब्दील होता जा रहा था। वहां दिन रात इतनी भीड़ आने लगी कि पैर रखने को जगह ना बची।

हालात ये हो गये कि दूध की कमी हो गई और दूध वालों ने आधा गिलास दूध पचास रुपये तक बेचा। दूध में दस गुना तक पानी मिलाया जाता था परंतु सवाल श्रद्धा और विश्वास का था सो कोई कुछ नहीं बोल सकता था। दूध के साथ-साथ लोगों ने अब फल और रुपये भी चढ़ाने शुरु कर दिए। सारे गांव की बेरोजगारी धीरे-धीरे खत्म होती जा रही थी। गांव के सभी लोग कुछ ना कुछ काम करके बहती गंगा में हाथ धो रहे थे।

पास के कस्बे के कुछ दुकानदारों ने भी वहां अपनी

दुकाने खोल ली और उसके साथ ही टैंट और शामियाने भी लगवा दिए ताकि दर्शनार्थी वहां सो बैठ सकें और उनकी बिक्री भी बढ़ती रहे। गर्मियों के दिन थे सो दर्शन करने वालों की तादाद रात्रि में अधिक बढ़ जाती। दूर दूर से लोगों के झुंड़ के झुंड़ गाते बजाते आते और दर्शन करते। रात भर वहां मेला लगा रहता।

अब रज्जू साधारण किसान नहीं बल्कि रज्जू बाबा बनकर लोगों को आशीर्वाद दे रहा था। वह तन पर गेरुए वस्त्र और गले में रुद्राक्ष की अनेक प्रकार की माला पहन कर अपने आसन पर बैठ जाता। रज्जू बाबा ने अपने आप को असाधारण दिखाने के लिए कह रखा था कि में भोजन एक वक्त ही करुंगा। बाबा के भोजन में दूध, फल और अब तो मेवे भी आने लग गये थे। वह शाम को थाली को पहले तीनों मूर्तियों के उपर घुमाता फिर प्रसादस्वरुप भोजन ग्रहण करता था। इस समय दर्शन रोक दिए जाते थे। लोगो को उसमें ईश्वर का अंश दिखाई दे रहा था। बजरंग बली की जय के साथ-साथ लोग रज्जू बाबा का भी जयकारा लगाते थे।

रज्जू ने भजन को रात्रि में अपने पास बुलाया और कहा– "कल से तू एक टैंट लगवा ले। उसके आगे लिखवा दे कि 'तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिए यहां एक पानी की बोरिंग का निर्माण करवाया जाना है सो सभी दर्शनार्थियों से निवेदन है कि इस पुनीत काम के लिए दिल खोलकर दान दें। यह काम रज्जू बाबा के आदेश से किया जा रहा है, इसी में उनकी खुशी है।' इससे हमारे खेतों की सिंचाई भी हो जाएगी और लोगों को कोई आपत्ति भी नहीं होगी।" कहकर रज्जू ने एक पोटली भजन को थमा दी जिसमें दिन भर के चढ़ावे के रुपये थे।

गांव के ही बिजेन्दर मास्टर ने अपना पढ़ा-लिखा दिमाग दौड़ाया और इस मौके का फायदा उठाकर कुछ रुपये कमाने की सोचने लगा। उसने एक फोटोग्राफर को अपने साथ लिया और उन मूर्तियों और पहाड़ की कई मन मोहक तस्वीरें ली। दिल्ली जाकर उन फोटोग्राफ के पोस्टर बनवाये और बिक्री के लिए रज्जू के खेत में लगवा दिए। पोस्टरों पर लिखा था "इस फोटो को अपने पूजा-कक्ष में स्थापित कर विधि-विधान से पूजा कर पन्द्रह दिन में ही मनोवांछित फल प्राप्त करें।" इसका असर इतना तेज हुआ कि एक दिन में ही उसके एक हजार पोस्टर बिक गए। अधिक पोस्टर छपवाने के लिए बिजेन्दर ने अपना लड़का दिल्ली भेज दिया। एक दिन में ही विजेन्द्रर ने अपनी दो महीने की तनख्वाह के बराबर मुनाफा कमा लिया। आज बच्चों के भविष्य का निर्माता ही अंधविश्वास को बढ़ावा देने में जुट गया। गांव में वह अपने आदर्शवादी विचारों के लिए जाना जाता था परंतु आज वह इन विचारों को तिलांजली देकर रुपये कमाने में व्यस्त था।

गांव के ही बिरजा कुम्हार ने मिट्टी के कुल्हड़ और बर्तनों की भी दुकान वहां लगा ली थी। दुकान के सामने बोर्ड लगवा दिया जिस पर लिखा था– "मिट्टी के कुल्हड़ में भरकर ही मूर्तियों को दूध अर्पण करें तभी मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी।" पिछले पांच साल में जितने कुल्हड़ और बर्तन नहीं बिके थे उससे कहीं अधिक पिछले पांच दिन में ही बिक गए। बिक्री इतनी हो गई कि उसने मिट्टी लाने के लिए तीन गधे और खरीद लिए।

उसके बगल में ही गांव के पंडित रामकिसन ने भी अपनी दुकान जमा दी। उसे इस बात का बहुत अधिक दुख था कि मूर्ति की पूजा के लिए उसे पुजारी नहीं बनाया। दुकान के आगे एक बडा बोर्ड लगवा दिया जिस पर लिखा था– "दूध चढ़ाने से पहले पंडित जी के मंत्रोच्चार से अपने आप को पवित्र करें, तिलक लगवाएं, फिर दूध चढ़ाने जाएं तभी उत्तम फल की प्राप्ति होगी। श्रद्धानुसार दान करें और अपने बुरे कर्मों का नाश कर सुफल पायें।" पंडित जी कोई प्रकांड़ पंडित तो थे

नहीं, ले दे कर एक गायत्री मंत्र, कुछ हनुमान चालीसा की चौपाईया और मंगलम भगवान विष्णु वाला एक श्लोक ही उसकी जीविका के आधार स्तम्भ थे। इन्हें ही बोलकर वह आने वालों के दुष्कर्मों का नाश कर रहे थे। ये तो पता नहीं कि कुकर्मों का नाश हो रहा था या नही परंतु शाम को पंडित जी अपने घर अच्छी खासी रकम लेकर जाते थे। पंडिताइन भी अब खुश थी क्योंकि पंडित जी दिन भर मेले में व्यस्त रहते थे और अब पहले की तरह गांव की औरतों को ताका-झांकी का उसे समय ही नहीं था।

गांव का पच्चीस वर्षीय मुखराम एक पक्का दारुबाज था। सुबह से ही वह इसी जुगाड़ में रहता कि आज दारु के पैसे किससे ऐंठने हैं। स्वभाव का एक दम झक्की और हमेशा दूसरों की कमजोरी पर नजर रखना ही उसकी कमाई थी। पिछले एक महिने से वह पंडित राम किसन से दारु पीने के लिए पैसे ऐंठ रहा था क्योंकि पंडित जी को उसने एक औरत को छेड़ते हुए देख लिया था। मुखराम रामकिसन के पास आया और कहने लगा– "देखो पंडित जी आप अकेले-अकेले ही पैसे कमा रहे हो हमें भी तो कुछ हिस्सेदार बनाओ। मंत्र आप पढ़ो और दर्शनार्थियों पर जल के छींटे में मारूंगा। दोनों का काम बन जाएगा। मेरा भी शाम तक दारु का जुगाड़ हो जाया करेगा। "मुखराम ने कहकर बीड़ी सुलगाई।

पंडित जी की मजबूरी थी सो उसे भी साथ बैठा लिया। दर्शन करने वाले जब पंडित जी को दक्षिणा देते तो कुछ खुल्ले पैसे मुखराम की बाल्टी में भी डाल देते। शाम तक मुखराम भी सौ रुपये तक का जुगाड़ कर ही लेता था।

प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रुप से गांव को काफी आर्थिक फायदा हो रहा था। रज्जू के लड़के भजन ने पास में ही बोरिंग करने की मशीन चालू करवा दी थी। चार दिन में ही बोरिंग का काम खत्म हो गया और उसमें पानी भी अच्छा हो गया।

वहां प्रत्येक दर्शन करने वाला भिन्न भिन्न प्रकार की फरियाद लेकर आता था। रज्जू बाबा अब उन्हें एकांत में बुलाकर कुछ टोटके भी बताने लग गया था। उसके एवज में उसे गुप्तदान के रुप में अच्छा धन प्राप्त हो रहा था। किसी को औलाद की चाहत थी तो किसी को अपने लड़के की नौकरी की चिंता खाए जा रही थी। रज्जू बाबा के आशीर्वाद में सभी को अपना-अपना समाधान दिखाई दे रहा था। सट्टेबाज वहां सट्टे के नम्बर पाने की चाहत में आते। वे वहां की विचित्र और विभिन्न घटनाओं को फैलाकर अगले दिन का नम्बर घोषित करते थे।

सुखराम सट्टे का पुराना शौकीन था। उसने अपने पडौसी हरलाल को बताया– "कल रात रज्जू बाबा से मेरी बात हुई थी। मैंने उनसे सट्टे के नम्बर बताने की गुजारिश की थी। वे बड़ी मुश्किल से इस शर्त पर राजी हुए कि सट्टे में तुम्हें जो भी कमाई होगी उसका कुछ भाग मुझे दान देना होगा।" कहकर अपनी जेब में पडी कुछ पर्चियों को उलट-पुलट करने लगा।

"यार ये तो बहुत अच्छी बात है। मैं आज से ही मेले में इसका प्रचार करता हूं। जो भी हमसे नम्बर लेने आयेगा उससे हम दान स्वरुप कुछ रकम भी ले लेंगे। उसी में से बाबा को भी दक्षिणा देते रहेंगे।" दोनों ने योजना को अंतिम रुप दिया और लग गए प्रचार-प्रसार करने में। सटोरियों में ये बातें बडी जल्दी फैल गई। रात के नौ बजते ही सुखराम के पास सटोरियों की भीड़ जमा होने लगी। उनमें ज्यादातर जीप व बुग्गों के ड्राईवर होते थे। हरलाल उन्हें नम्बर बताने के बजाय कहता– "मुझे बाबा ने कुछ हर्फ दिए हैं। उन्हें फैलाना तुम्हारा काम है। सौ रुपये लगेंगे क्योंकि ये रुपये में नहीं रखूंगा, सारे रुपये बाबा की दान पेटी में जाएंगे।" इस तरह सुखराम और हरलाल का धंधा जोरों से चल पडा।

कई लोगों का तो काम ही बात का बतंगड़ बनाने का होता है और इस काम में वे लोग जी जान लगा देते हैं।

वहां ऐसे लोगों की कमी नहीं थी। कोई उस जगह के बारे में कहता कि त्रेता युग में हनुमानजी ने यहीं बैठकर तपस्या की थी। दूसरा कहता कि जब हनुमान जी द्रोणागिरि पर्वत को ले जा रहे थे तो पर्वत का ये टुकडा उसी में से टूटकर गिरा था। गांव का बकरी चराने वाला रामू कह रहा था कि कल रात मेरी नींद जल्दी खुल गई थी, मैं पहाड़ की तलहटी की ओर घूमने चले आया। मैंने देखा कि पहाड़ के बीचों-बीच से जय श्रीराम के उद्घोष सुनाई दे रहे थे।

इसी तरह महिमा मंड़न बढ़ता गया और उसे सुन-सुनकर अब लोगों ने पर्वत की परिक्रमा भी करना चालू कर दिया। पहाड़ के चारों ओर बसने वाले गांव ने भी परिक्रमा के रास्ते में अपनी-अपनी दुकानें और विभिन्न देवी-देवताओं के छोटी-छोटी चबूतरी बना दी। जिनके उपर आने वाले कुछ ना कुछ चढ़ाकर जाते थे।

अब रज्जू को चढ़ावे में भारी रुपये मिलने लगे तो उसके दिमाग में कई प्रश्न उठने लगे। वह सोचने लगा कहीं गांव वाले कुछ अड़चन ना खडी कर दें सो सारा काम गुप-चुप करने की ठानी। उसने कच्चे चबूतरे के चारो ओर शामियाने लगवा दिये। उसमें एक द्वार घुसने का और पीछे की ओर एक द्वार बाहर जाने के लिए बनवा दिए ताकि अन्दर दान करने वालों का सार्वजनिक रुप से ज्यादा प्रचार-प्रसार ना हो। गांव में भी अब आय व्यय की चर्चा होने लगी थी लेकिन खुलकर कोई कुछ नहीं कह पाता था। भजन ने चुपचाप अलवर में चार पांच प्लाट खरीद लिए जिसका गांव वालों को कोई भनक तक न लगने दी। एक प्लाट पर मकान बनाने का काम भी चालू करवा दिया।

इन्ही दिनों रज्जू की लड़की कमला जो कि एक गरीब परिवार में ब्याही थी, की लड़की सन्नो की शादी तय हो गई। उसमें रज्जू को भात भी भरना था। कमला का पति मेहनत मजदूरी करके जीवन यापन करता था। उसने अपनी लड़की सन्नो की शादी एक इंजीनियर से तय की थी और दहेज में दो लाख रुपये भी तय हुए थे। सभी गांव वाले हैरान थे कि शादी में इतने पैसे कहां से खर्च करेगा। इसकी कौन-सी लाटरी लगी है। कल तक तो इसके पास खाने को दाने भी नहीं थे।

आखिरकार शादी का दिन आ ही गया। भजन, रज्जू और साथ में बहुत से गांव वाले भात की रस्म में पहुंचे। रज्जू ने तीन लाख रुपये भात में दिए। सभी गांव वाले भोंचक्के रह गये। धीर-धीरे गांव में इस बात का बखेडा मच गया। सभी यही कह रहे थे कि रज्जू ने चढ़ावे के पैसे से ही भात भरा है। ये बात चल ही रही थी कि एक ट्रेक्टर ट्राली में भरकर लोग दर्शन के लिए रज्जू के खेत की तरफ आ रहे थे। खेत से थोडी ही दूरी पर ट्रेक्टर और जीप में जोरदार भिडंत हो गई और वहीं पच्चीस आदमी मारे गए। चारों ओर कोहराम मच गया।

दूसरी तरफ मेले में पैसे कमाने की हवस में दुकानदारों ने खाने की चीजों में नकली तेल और घी का प्रयोग किया था सो उसके खाने के पश्चात सैकडों लोग डायरिया और हैजे के शिकार हो गये। दो ही दिन में पास के कस्बे का अस्पताल रोगियों से खचाखच भर गया। इन सभी घटनाओं से प्रशासन भी हरकत में आ गया। दुकानदार और कुछ गांव वालों को गिरफ्तार कर लिया गया।

गांव के पंडित ने लोगों को भड़का दिया कि रज्जू ने चढ़ावे से इतनी कमाई की है कि लड़की के यहां तीन लाख तो भात में ही दे दिये। उसके पास अब लगभग दस लाख रुपये नकद है। उन सब पैसो पर गांव का भी हक है। उससे तुरन्त हिसाब लिया जाए। नही तो गांव में अनहोनी घटना हो सकती है। लोग रज्जू के पास आये और उससे हिसाब मांगने लगे। पहले तो रज्जू आंय बांय करने लगा। उसने पैसे होने से मना कर दिए। कह दिया मैंने कोई पैसा इकट्ठा नहीं किया। में तो जो भी आता था

उसे दर्शनार्थियो को प्रसाद स्वरुप वापस लौटा देता हूं।

“तो फिर भात में देने के लिए तीन लाख रुपये की कहीं से बारिश हो गई थी। ये बोरिंग भी अपने आप ही हो गई होगी।” गांव के झम्मन ने ललकारते हुए कहा। इतने में ही वहां विजेन्दर मास्टर भी आ धमका और कहने लगा– “इतना ही नहीं इसके लड़के ने तो अलवर में कई प्लाट भी खरीद लिए हैं। हमें यहां बेवकूफ बना रहा है। इसकी ही करतूतों की वजह से आज कई गांव वालो को पुलिस पकड़कर ले गई।” इन बातों को सुनकर रज्जू के चेहरे पर हवाईयां उड़ने लगी और हिम्मत कर बोला– “धर्म की जड़ सदा हरी रहती है। मुझे जो भी चढ़ावा आया है वह सुरक्षित है। उस पर न तो मेरा हक है और ने ही किसी गांव वाले का। उन्हें हम सब मिलकर गांव की भलाई के कामों में लगाएगे। कल सारे गांव वाले मेरे पास आ जाओ। मैं सारा हिसाब तुम्हारे सामने रख दूंगा। फिर जो सभी उचित समझे वही किया जाएगा।” कहकर रज्जू ने मूर्तियों के आगे सिर झुकाया और माला जपने लग गया। गांव वालो को भी विश्वास हो गया सो सभी अपने-अपने कामो में लग गये।

अगले दिन जब सारे गांव वाले वहां एकत्रित हुए तो रज्जू कहीं नजर नहीं आ रहा था। रात्रि के तीसरे प्रहर में ही रज्जू सब कुछ समेटकर अनजान गन्तव्य की ओर भाग गया था। भजन भी रात में ही वहां से फरार हो गया था। यदि कोई था तो चबूतरे पर रखे तीनों पत्थर जो ऐसे लग रहे थे मानो वे भी रज्जू की ही तलाश कर रहे हों।

– विजय सिंह मीणा
निदेशक (रा.भा.)
जल शक्ति मंत्रालय

मेरे ईश्वर

मेरी कविता का प्रेरणा तुम हो
लिखते कलम से स्याही तुम हो
लिखा हुआ हर एक अक्षर तुम हो
शब्दों को जोड़े वो माला तुम हो
मस्तिष्क में जन्मे कल्पना शक्ति तुम हो
अंधेरों में राह दिखाने वाली रोशनी तुम हो
शब्दों के मेल में खो जाए वो अद्भुत तुम हो
हर अक्षर में निर्लिप्त भाव तुम हो
वाक्यों में बसे अर्थ तुम हो
जिसे आशा से खोजो वो खजाना तुम हो
पुण्य से ही नहीं बल्कि प्रार्थना से मोहित प्रभु तुम हो
दयालु तुम हो, कृपालु, भोले सब कुछ तुम हो
शिक्षा तुम हो, रक्षा तुम हो
गुरू तुम हो, भगवान तुम हो
हर जगह में बसे ईश्वर बस तुम ही तुम हो।

– उदयश्री
डाटा एंट्री ऑपरेटर, हैदराबाद

स्वास्थ्य संबंधी

कुछ आवश्यक उपाय

- रोज सुबह उठने के बाद खाली पेट आंवले के एक मुरब्बे को खाने से दिमाग तेज होता है और यादाश्त भी अच्छी रहती है।
- यदि आप अपना खून साफ रखना चाहते हैं तो आपको अंकुरित खाने का प्रयोग करना चाहिए। अंकुरित अनाज में प्रोटीन अधिक मात्रा में पाया जाता है जिससे शरीर को मजबूती प्राप्त होती है और बहुत से रोगों से लड़ने की शक्ति मिलती है।
- शुद्ध तथा सम्पूर्ण आहार मन तथा शरीर को शान्ति प्रदान करता है और इससे आत्म विकास काफी तेजी से होता है।
- एक सम्पूर्ण भोजन में मक्खन, पनीर, अनाज, फल, सूखे मेवे, दालें, सब्जी, दूध, साग इत्यादि होते हैं, जो आपके भोजन को पूरा करते हैं।
- ताम्बे के बर्तन में रखे पानी को पीने से कैंसर से लड़ने में काफी मदद मिलती है क्योंकि इसमें एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं। ये एंटीऑक्सीडेंट्स उम्र का असर कम करने में भी सहायक होते हैं। पेट की चर्बी को कम करने तथा शरीर को स्वस्थ रखने में भी ताम्बे के बर्तन में रखा पानी पीना काफी अच्छा होता है। ऐसा करने से दिल स्वस्थ रहता है तथा दिल का दौरा पड़ने की संभावना कम हो जाती है। ताम्बे के बर्तन में रखे पानी को पीने से चेहरे पर निखार आता है और त्वचा की बीमारियां भी दूर रहती हैं।
- यदि किसी छोटे बच्चे ने मिट्टी खा ली हो तो उस मिट्टी को निकालने के लिए बच्चे को पके हुए केले में शहद मिला कर खिला दें, इससे बच्चों के पेट में बैठी हुई मिट्टी बाहर निकल जाएगी।
- जब किसी को चोट लगती है या घाव होता है तो जाहिर सी बात है कि उसमें खून भी निकलता है। ऐसी परिस्थितियों में घाव को फिटकरी के पानी से धो देना चाहिए और उस के ऊपर फिटकरी पीस कर लगा देनी चाहिए। ऐसा करने से चोट से बहने वाला खून बंद हो जाता है तथा काफी राहत मिलती है।
- यदि आपके कान में दर्द है तो अपने कान में प्याज के रस को गुनगुना करके डाल लें, कुछ ही समय में आपको राहत मिल जाएगी।
- खाने को एल्युमीनियम के बर्तनों में पकाने से खाने के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। अगर खाने को मिट्टी के बर्तनों में पकाया जाए तो उसके सभी पोषक तत्व उसमें ही मौजूद रहते हैं तथा वह भोजन शरीर पर अपना पूर्ण रूप से असर डालता है।

हिन्दी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता

कहानी

प्रेम का प्रभाव

लाला रामजीलाल का छोटा सा परिवार था। लालाजी के अतिरिक्त उनकी पत्नी अंगूरी देवी, बेटा सुनील, पुत्रवधू शीला और एक पोता अंकुर था। किसी समय लालाजी का व्यवसाय अच्छा चल रहा था, लेकिन पिछले दो साल से उन्हें व्यापार में लगातार घाटा हो रहा था। आमदनी का ग्राफ लगातार गिरता ही जा रहा था, जिसके कारण पिता-पुत्र और सास-बहू में किसी-न-किसी बात पर तकरार होती रहती थी।

व्यापार में आए घाटे को लेकर कभी पिता पुत्र को दोषी ठहराता, तो कभी पुत्र पिता को। इसी प्रकार धनाभाव के कारण सास-बहू में तकरार होती रहती।

इतना सब होने पर भी परिवार को जिस कड़ी ने जोड़ रखा था। वह था 5-6 वर्ष का मासूम अंकुर।

वह समझ नहीं पाता था कि आखिर उसके पिता और दादा या माँ-दादी में रोज ही तकरार क्यों होती है! जब-जब भी ऐसा होता तो मासूम अंकुर सहम जाता और घबराकर घर में ही बने छोटे से मंदिर-कक्ष में जाकर छिप जाता। इधर घर में झगड़ा होता रहता, उधर मंदिर में वह भगवान का चेहरा ताकता रहता। वह मन-ही-मन भगवान से प्रार्थना करता, "हे प्रभु! हे भोलेनाथ! हमारे घर का यह झगड़ा कब खत्म होगा? ये लोग शांति और प्रेम से क्यों नहीं रहते?" ऐसा सोचते-सोचते मासूम अंकुर रो पड़ता। फिर वहीं भगवान के चरणों में सिर रखकर न जाने कब तक सिसकता रहता और सिसकते-सिसकते ही सो जाता।

ऐसा अकसर होता था।

एक दिन मानो ईश्वर ने उस मासूम की प्रार्थना सुन ली।

उस दिन सुबह-सुबह का वक्त था। रविवार का दिन था।

लाला रामजीलाल घर के चौबारे में चिंतित बैठे थे कि अचानक द्वार पर से एक स्वर उभरा-

"अलख निरंजन, अलख निरंजन।"

लालाजी उठकर द्वार पर आए। मासूम अंकुर भी दादाजी के साथ द्वार पर उपस्थित हुआ।

द्वार पर एक तेजस्वी साधु खड़े थे।

मासूम अंकुर एकटक उनका चेहरा देखने लगा।

साधु ने भी उसे देखा और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा।

"बड़ा मासूम और भोला बालक है, मगर प्रसन्नचित्त नहीं दिखता।"

"क्या बताऊँ महाराज! घर के हालात खराब हैं। आए दिन व्यापारिक मसलों को लेकर हम पिता-पुत्र की तकरार होती रहती है, जिसका गलत प्रभाव इस मासूम पर भी पड़ रहा है," दु:खी स्वर में लाला रामजीलाल बोले, "व्यापार में लगातार मंदी आ रही है। घर में सुख-समृद्धि नहीं है। आप ही कोई उपाय बताएं।"

साधु मुस्कराए और बोले, "इस बच्चे की मासूमियत को देखकर मुझे बड़ा तरस आ रहा है। यह निष्पाप है, अत: इसकी खुशी के लिए मैं आपको एक वरदान दे सकता हूँ। मेरे पास प्रेम, सुख और समृद्धि नाम के

तीन मोती हैं। तुम अपने परिवार में सलाह करके मुझसे एक मोती ले लो, लेकिन ध्यान रहे, इस बच्चे की बात अवश्य सुनना।"

"अ⋯आप भीतर आइए महाराज⋯, भीतर आइए।" लालाजी ने साधु महाराज को आदर से अंदर बुलाकर बिठाया। फिर अपने पूरे परिवार को बुलाकर साधु महाराज की बात बताई।

अब घर के चारों सदस्यों में बहस शुरू हो गई बहू-बेटा सुख चाहते थे, जबकि लालाजी और उनकी पत्नी समृद्धि चाहते थे।

लालाजी और उनकी पत्नी का तर्क था कि समृद्धि होगी तो हर प्रकार का सुख खरीदा जा सकता है।

बहू-बेटे का तर्क था, "सुख-ही-सुख होगा तो कोई चिंता ही नहीं होगी।

इस प्रकार की बहस होते देखकर मासूम अंकुर दु:खी हो गया। उसके दु:ख और उदासी का सबसे बड़ा कारण यही था कि उनके परिवार में आपसी प्रेम नहीं था। आपसी प्रेम न हो तो कैसी समृद्धि और कैसा सुख!

अत: उन्हें झगड़ते देखकर वह साधु महाराज से मुखातिब होकर बोला, "बाबा आप हमें प्रेम का मोती दे दें ताकि मेरे दादा-दादी और माता-पिता कभी एक-दूसरे से न झगड़ें।"

"अरे मूर्ख! ये क्या कहता है! घर में समृद्धि नहीं होगी तो प्रेम को क्या रखकर चाटेंगे!" दादी ने डांटा।

बाकी लोग भी कुछ बोलते, उससे पहले ही साधु ने हाथ उठाकर उन्हें शांत कर दिया और क्रोधपूर्ण नेत्रों से उन्हें घूरते हुए कहा, "मूर्ख यह बालक नहीं, बल्कि तुम चारों मूर्ख हो। संकट और अभाव के कारण तुम्हारी बुद्धि हर ली है। इस बच्चे ने बिलकुल ठीक मोती चुना है। इस समय तुम्हारे घर की जो हालत है, उसे देखते हुए इस समय तुम्हें आपसी सद्भाव और प्रेम की ही सबसे अधिक आवश्यकता है।" कहकर साधु ने अपने झोले में हाथ डाला और उसमें से एक मोती निकालकर अंकुर को देते हुए कहा, "लो बेटा, यह प्रेम का मोती है। इसे ले जाकर अपने घर के मंदिर में रख दो।"

नन्हे अंकुर ने मोती लेकर बड़ी ही श्रद्धा से माथे से लगाया और दौड़कर मंदिर में रख दिया।

साधु ने बच्चे को आशीर्वाद दिया, फिर लालाजी से कहा, "लालाजी, मैं छह माह बाद आऊंगा, तब तुम्हें किसी चीज की आवश्यकता होगी, तब वह भी दूंगा। अलख निरंजन।"

ऐसा कहकर साधु चले गए।

पूरे परिवार ने उन्हें श्रद्धा से नमस्कार किया और अपने-अपने काम में लग गए।

समय गुजरने लगा। छह माह गुजर गए।

एक दिन द्वार पर लालाजी को फिर वही आवाज सुनाई दी, "अलख निरंजन।" आवाज को सुनते ही पूरा परिवार दौड़कर द्वार पर आ गया।

द्वार पर वही साधु महाराज खड़े थे जो छह महीने पहले उस परिवार को प्रेम का वरदान दे गए थे। सभी ने बाबा को प्रणाम किया, चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया और सम्मान सहित उन्हें घर के अंदर ले गए।

आज वहां का नजारा बदला हुआ था। छह माह में ही पूरे घर का कायाकल्प हो गया था। सुख और संपन्नता स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही थी।

बाबा ने मासूम अंकुर के सिर पर हाथ फेरा। आज के अंकुर में और छह माह पहले के अंकुर में जमीन-आसमान का अंतर दिखाई दे रहा था। यही बच्चा छह माह पूर्व एक मुरझाए और सूखे फूल की भांति था, किन्तु आज उसका चेहरा ताजे गुलाब की भांति खिला हुआ और प्रफुल्लित दिखाई दे रहा था।

साधु बाबा ने सर्वप्रथम उसी से पूछा, "कहो बेटा, कैसा लगता है अब?" "बहुत अच्छा बाबा," खुश होकर वह बोला, "अब बहुत अच्छा लगता है। उस दिन से आज तक हमारे घर में झगड़ा नहीं हुआ। सब प्यार से रहते हैं।"

अब साधु महाराज ने लाला रामजीलाल की ओर देखा, "कहिए लालाजी, अब और क्या चाहते हैं? मैंने आपसे कहा था न कि मेरे पास तीन मोती हैं। एक मैं आपको दे गया था, दो बाकी हैं।"

"बस प्रभु''बस''," लालाजी ने बाबा के चरण पकड़ लिये, " अब कोई मोती नहीं चाहिए। प्रेम के उस मोती ने ही मेरे घर को सुख और समृद्धि से भर दिया है। आपकी कृपा से यह बात मेरी समझ में आ गई है कि जहां प्रेम होता है, वहीं सुख और समृद्धि भी रहती है।"

लालाजी की बात सुनकर बाबा मुसकरा दिए।

दोस्तों! इस कहानी से हमें बड़ी ही अनमोल शिक्षा मिलती है-

- सुख और समृद्धि का अपना कोई ठिकाना नहीं होता। ये तो वहीं जाकर बसते हैं, जहां प्रेम और त्याग होता है, जहां परोपकार की भावना होती है।
- देखा भी गया है कि कल तक जो परिवार बेहद संपन्न था, बेहद खुशहाल था, जहां रोज सुखों की बरसात होती थी, वहां जैसे ही स्वार्थ की भावना जागृत हुई, वैसे ही परिवार में प्रेम का अंश कम होने लगा। प्रेम की भावना जल गई और प्रेम के समाप्त होते ही सभी बिखर गए। समृद्धि जाती रही और सुख भी चला गया।

दोस्तों! यदि आप इस बात से दुखी हैं कि आपके घर-परिवार में सुख-समृद्धि नहीं है, शांति नहीं है, तो सबसे पहले अपने परिवार में प्रेम की ज्योति जलाइए और उसमें स्वार्थ की आहूति दीजिए। जब पूरा परिवार प्यार की माला में गुंथ जाएगा, तो उसकी खुशबू से सुख-समृद्धि, यश, मान-सम्मान सभी स्वयं चलकर आएंगे और आपके घर में तब तक स्थायी रूप से निवास करेंगे जब तक आपके परिवार में प्रेम एवं अपनेपन की महक बनी रहेगी; छोटी सी इस कहानी की यही मुख्य शिक्षा है।

◆◆◆

अंग्रेजी तो
बस भाषा है
पर हिंदी तो
राष्ट्रभाषा है

साभारः जल जीवन का आधार

सागर नियन्त्रण कानून

पानी की चर्चा करते हुए मछली के उद्योगों पर प्रकाश डालना आवश्यक है। सन् 1981 में सागर नियन्त्रण कानून पास किया जिससे मछुआरों को संकट से बचाया जा सके। उदाहरण के लिए मल-जल का निस्तारी जल समुद्र में गिरने से तथा उच्चतम तकनीक से मछली मारने वाले जहाजों के कारण गोवा में मछली के संसाधन समाप्त हो गए हैं।

सन् 1971 में कुल 39,000 टन मछलियां पकड़ी गईं। सन् 1984 में वह घटकर केवल 25,201 टन रह गई। कुमारी एन्न डियस के परिपत्र द्वारा यह तथ्य मालूम हुआ जो उन्होंने मत्स्य संसाधन पर हुए सेमिनार में प्रस्तुत किया था। गोवा सरकार ने 1960 के आस-पास 200 यन्त्र चालित मछली पकड़ने वाली नावें 105 किलोमीटर समुद्र तट के लिए मंगाईं। आज उनकी संख्या तिगुनी हो गई है। इससे परम्परा से चलते आए स्थानीय मछुआरों का काम समाप्त हो गया है और उनकी रोजी-रोटी छिन गई।

सागर नियन्त्रण कानून के अनुसार स्थानीय परम्परागत मछुआरों को समुद्र के तट से 5 किलोमीटर की दूरी तक मछली मारने का अधिकार मिला परन्तु मछली के ट्रालरों के स्वामियों ने इस नियम का भी उल्लंघन किया। कभी-कभी तो वे तट से 100 मीटर तक आ गए।

औद्योगिक निस्तारी जल से मछलियों और पानी के अन्य जानवरों को और भी हानि पहुंची, बेलसाओ खाड़ी में विषैले निस्तारी द्रव आरसेनिक और अमोनिया से सारी मछलियां मर गईं। गोवा के विकास शोध संस्थान के बेनिफेशियो मेंसेज के एक अध्ययन के अनुसार संजीवनी चीनी मिल का चोटा खण्डे पार नदी में पड़ गया। यह गन्दा पानी वहां की जल वितरण व्यवस्था में पड़ गया। उसने जल व्यवस्था के छनने का काम बन्द कर दिया और यही पानी गोवा के कस्बों में गया तो अतिसार, पीलिया और आन्त्रशोध की महामारी फैल गई। गोवा में मल-जल के निकास की कोई व्यवस्था नहीं।

दलदल या गीली भूमि

रैमसर कनवेंशन (1971) के अनुसार गीली भूमि या दलदल से तात्पर्य उस भूमि से है जो स्थायी या अस्थायी तौर पर खारे या मीठे पानी से रूकी हुई या बढ़ती हुई सागर की कच्छ या देश के भीतर की उथली या गहरी भूमि हो। पानी की चर्चा के साथ हमें पानी-दार भूमि की भी चर्चा करनी चाहिए। आमतौर से लोग दलदल भूमि को बेकार समझते हैं, जिसमें मच्छर पैदा होते हैं और चलना-फिरना दूभर हो जाता है, जिसमें घास भी नहीं हो सकती। दलदल की मिट्टी बहुत गीली रहती है- आसपास का पानी (अपेक्षाकृत ऊंची जगहों से) यहां भरता है और प्राकृतिक जल निकास मछली-पालन के लिए बड़ा उपयोगी है। देश भर में 200 ऐसे दलदल हैं जहां मछली-पालन सफलता से हो सकता है।

कोलकाता में ऐसे एक दलदल को भरकर मकान बनाने के लिए जमीन निकालने का प्रयास हुआ। पहले तो लोगों ने युगोस्लाव इंजीनियरों की बड़ी तारीफ की कि वे गंगा की तली से बालू निकालकर इस गीली भूमि को ऊंचा कर रहे हैं, जिन पर मकान और दुकान बनेंगी, परन्तु बाद में कोलकाता के वे भाग दलदल बनने लगे

जहां से पहले पानी बहकर इसी गीली भूमि पर आता था। मछली के प्रेमी बंगाली बन्धुओं को दलदल पाटने की योजना बहुत हानिकारक सिद्ध हुई क्योंकि यहां प्रति हेक्टेयर 10 टन तक मछली पैदा होती थी। अब नहीं हो सकती। यह क्षेत्र ऊंचा हो गया और एक लाभप्रद उत्पादन समाप्त हो गया। कुछ दूर के क्षेत्रों में जहां दलदल मौजूद है और जहां जल-मल प्रणाली भी आती है। मछली का उत्पादन प्रति हेक्टेयर 12 टन तक हो जाता है। इसके अतिरिक्त ऐसी गीली भूमि पर पानी वाले पक्षी भी पलते हैं।

देश में मछली का उत्पादन (देश के भीतरी भागों में)

जहां पानी है और साल भर भरा रहता है या जहां साल भर लगातार पानी रहने का प्रबन्ध हो सकता है, वहां मछली-पालन भी होना चाहिए। समुद्र के अलावा देश के भीतरी भागों में मछली-पालन की बहुत गुंजाइश है।

भारत वर्ष में मछली का उत्पादन लगभग 26 लाख टन है, जबकि खपत 100 लाख टन है। यदि संगठित रूप से जल संसाधनों का प्रयोग किया जाए और उनमें मछली पाली जाए तो देश में प्रोटीन की कमी का बहुत अंश पूरा हो सकता है। मछली-पालन की विकास एजेंसियां देश के 111 जिलों में संगठित हैं। उनके प्रयास से मछली-पालन में 69 लाख टन से 95 लाख टन उत्पादन बढ़ा है और उचित संगठन तथा प्रयास से 100 लाख टन उत्पादन मिल सकता है, अर्थात् हम मछली के मामले में स्वावलम्बी हो सकते हैं।

नदियों और तालाबों के अलावा समुद्र एवं महासागर में मछली मारने का व्यवसाय अनन्त काल से चला आ रहा है। परन्तु पिछली कुछ शताब्दियों में यह व्यवसाय सागर में रहने वाले प्राणियों के लिए और मत्स्य व्यवसाय के लिए घातक बन गया है।

आज उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक समुद्र में प्रदूषण ही प्रदूषण है। पेट्रोल, क्रूड तेल, विषैले रसायन आदि निर्भय रूप से डाले जाते हैं- इसे रोकने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर नहीं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गम्भीर प्रयत्न होना चाहिए।

इन समुद्रों के प्रभाग में मछली मारने का व्यवसाय शुरू होता है, अनेक देशों के मछुआरे और मछली मारने वाली कम्पनियां बड़े-बड़े जहाजों से बहुत-सी मछलियां पकड़ लेती हैं, और भविष्य के लिए उनके खजाने को बनाए रखने की बिलकुल चिन्ता नहीं करती हैं- इस लूट में सबसे अधिक भागीदार बड़ी कम्पनियां होती हैं। एक जगह मछलियों के समाप्त हो जाने पर ये आगे बढ़ जाती हैं। आज का लाभ कल की चिन्ता नहीं-अपना लाभ, छोटे मछुआरे भूखे मरें उनसे उनका क्या लेना देना।

गांव के जलाशयों में मछली-पालन

गांव के भीतर जो तालाब, पोखरे या बड़े गड्ढे होते हैं, उनके किनारों को सीधा कर किनारों या भीटों की मरम्मत होनी चाहिए, ताकि उस जलाशय का पानी बाहर न जाए। मछली-पालन के लिए हर राज्य और उनके जिलों में मत्स्य पालन विभाग की शाखाएं हैं। उनको मछली बीज मिल सकते हैं। मत्स्य पालन इतना कठिन नहीं है। समस्या केवल रक्षा की है कि चिड़ियां या आदमी उन्हें खा न जाएं- पानी की कमी न पड़ने पाए और उनके आहार के लिए गोबर की खाद, खली और अमोनिया सल्फेट उचित मात्रा में डालना चाहिए और यह देखने की आवश्यकता है कि ऐसे जलाशय में कहीं

से मरकरी, कास्टिक सोडा या दूसरे हानिकारक रसायनों के अंश बहकर न आ जाएं।

मछलियां पानी के मल को तथा कीड़े-मकोड़ों को खा लेती हैं और सचमुच वे पानी को गन्दा नहीं, साफ करती हैं।

दलदल और गीली भूमि वाले क्षेत्रों की अपनी उपयोगिता है। कहीं-कहीं पत्ती लकड़ी और सेवार आदि सड़कर एक ऐसी मिट्टी बन जाती है जिसे पीट या पांस कहते हैं, और जो नत्रजन तथा अन्य पोषक तत्त्वों से भरी होती है। शहरों में इसे खरीदकर गमलों या फूल की क्यारियों में डालते हैं और यह बहुत महंगे दामों पर बिकती हैं। इसलिए इसका शोषण भी बहुत होता है और धीरे-धीरे इग्लैंड तथा यूरोप के अनेक देशों में ये खत्म हो रहे हैं।

दलदल वाली भूमि में मछलियां पाई जाती हैं तथा चिड़ियों के लिए इस में कीड़े-मकोड़े और अन्य खाद्य पदार्थ मिलते हैं। चिड़ियों के शरणस्थल के रूप में इनकी बड़ी उपयोगिता है। इसलिए इन क्षेत्रों को नष्ट करने के प्रयास का डटकर मुकाबला करना चाहिए।

सन् 1950 से 1970 तक अमेरिका में प्रतिवर्ष औसतन 18,500 हैक्टेयर दलदली भूमि खत्म हुई। जहां इस तरह की भूमि को पाटकर मकान या शहर बनाते हैं, वहां अतिरिक्त पानी जिसके कारण दलदल बनता है, नई भूमि में फैल जाता है और उसे दलदली कर देता है।

अनेक देशों में गैर सरकारी संस्थाएं दलदली भूमि को खत्म करने के प्रयासों के खिलाफ सफलतापूर्वक लड़ रही है। इन्हें राष्ट्रीय पार्क का रूप दिया जा रहा है, जहां मछलियों और अन्य जलजीवों के शरणस्थल कायम हो रहे हैं। फिर भी उन पर दबाव चल रहा है। दक्षिण ाी एशिया में बांग्लादेश की फरक्का योजना से सुन्दर वन की दलदली भूमि समाप्त हो रही है। सबसे अधिक महत्व की बात है कि इन क्षेत्रों के आस-पास की जनता को बताया जाए कि पर्यावरण की रक्षा के लिए दलदली तथा पांस वाली भूमि को सुरक्षित रखना चाहिए न कि उन्हें खेती या आवास की योजना में परिवर्तित किया जाए। चुनौती कठिन है, पर स्थानीय जनता के सहयोग तथा नई पीढ़ी की शिक्षा के आयोजन से इस समस्या का समाधान सम्भव है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि गीली भूमि ऊजड़ भूमि नहीं है। उदाहरण के लिए सुन्दर वन का विस्तृत डेल्टा है जिसमें नमकीन पानी से समय-समय पर डूबने वाली भूमि पर अनेक प्रकार के पेड़-पौधे और झाड़ पाए जाते हैं, जैसे नरकट या सरकंडे (बड़ी घास), जो टोकरियां बुनने के काम आते हैं। ताल पाट नामक पौधा यद्यपि पानी को दबाता है पर उसका अपना ही उपयोग है। गीली भूमि की सबसे बड़ी भूमिका बाढ़ के पानी को रोकने में है। इनमें उगने वाले पौधे तूफानों की गति को कुछ हद तक धीमी करते हैं और उनकी भयंकरता से लोगों की रक्षा करते हैं। इनमें शरण लेने वाले जंगली भैंसे, गैंडा तथा जाति विशेष के हिरन और नील गाय होते हैं। जो प्रकृति की एकता और अखण्डता को सबूत देते हैं।

इनमें जल मुर्गी, बत्तख और अन्य चिड़ियों का भी निवास होता है। कुछ बाहर से आने वाली चिड़ियां भी इनमें डेरा डालती हैं जो थोड़े समय के लिए यहां आती हैं, फिर अन्यत्र चली जाती हैं। चिड़ियों की लगभग 25 प्रतिशत जातियां निचली भूमि के दलदली वातावरण में पूर्णतः पलती हैं। शेष 50 प्रतिशत भी इनमें अपना कुछ समय काटती हैं।

नौकारोहण, मछली मारना और तैरना भी उथले जल में सरल होता है। चिड़ियों का परिवीक्षण करने वालों के लिए तो गीली भूमि के क्षेत्रों को अनोखा आकर्षण मानना चाहिए, पर आज ये स्थान भरते या पटते जा रहे हैं। कुछ शहरों में तो इन्हें पाटकर नगरीय मनोरंजन क्षेत्र बना दिया गया है, पर यह कार्य अदूरदर्शिता से भरा है। प्रकृति के साथ इस खिलवाड़ की अनेक हानियां हैं, जिस पर पहले ही चर्चा हो चुकी है।

पानी की चर्चा करते हुए मछली उद्योग पर प्रकाश डालना आवश्यक है। नए मछली उद्योग के जहाजों और

मीलों तक लम्बाई में फैलने वाले जालों से मछली की सतत उपलब्धता में खतरा हो गया है। टूना और हैडक समुद्रीय मछलियां समाप्त होने जा रही हैं। समुद्र की रक्षा मछली-उद्योग के डाकुओं से हो नहीं पाती, क्योंकि समुद्रों का क्षेत्र बहुत बड़ा है और तट-रक्षक पूरी तरह निगरानी नहीं कर पाते। कृषि और खाद्य संगठन के अनुसार प्रतिवर्ष 10 करोड़ टन मछली निकाली जाए तो उसकी लगातार आपूर्ति बनी रह सकती है। किन्तु 1987 में लगभग 11.5 टन मछली पकड़ी गई। देशों की तट सीमा की अवधि की भी मछली के डाकू परवाह नहीं करते।

◆◆◆

संक्षिप्त रचनाएं

बहुत दिन बाद.....
भूला हुनर याद आया है.....
कागज और कलम की जगह.....
मोबाईल का कीपैड काम आया है।

अगर इरादों में है दम।
तो कुछ भी कर लेगें हम।
अगर मैं थक गया, तो मैं रूक गया
और अगर मैं रूक गया तो हार गया,
और हारना मेरी फितरत में नहीं है।

हवाओं से कह दो
उससे भी आगे निकल जाऊंगा
क्योंकि मेरी रफ्तार ही मेरी पहचान है।

मेरे अलफाजों को पढ़कर गौर फरमाइएगा
समझ ना आए तो बेझिझक पूछ लीजिएगा

बस...दो...ही...काम...
हमसे...ना...हुए...
ना...नींद...पूरी...हुई...
ना...ख्वाब...पूरे...हुए...।

मैं लिखता हूं बड़ी शिद्दत से.....
लोग इंतजार करते हैं पढ़ने को बेसब्री से.....
किसी दिन लिखे बिना छूट जाए तो.....
संदेश आता है.....
हो के रूक्सत हो लिए इस जमाने से.....

-कमलेश परमार
कनिष्ठ कम्प्यूटर प्रचालक
वाप्कोस, गांधीनगर कार्यालय

"अगर हिन्दुस्तान को सचमुच आगे बढ़ना है, तो चाहे कोई माने या न माने, राष्ट्रभाषा तो हिंदी ही बन सकती है, क्योंकि जो स्थान हिन्दी को प्राप्त है, वह किसी और भाषा को नहीं मिल सकता।"

प्रथम व्यावसायिक पायलट

कैप्टेन प्रेम माथुर

26 फरवरी, 1950, महिला प्रगति के इतिहास का एक सुनहरा दिन। सभी पत्रों में एक समाचार छपा– राष्ट्रीय विमान दौड़ प्रतियोगिता में एक महिला की शानदार विजय। 'एयरो क्लब ऑफ इंडिया' द्वारा कलकत्ता में आयोजित इस प्रतियोगिता में कुल 12 प्रतियोगी थे– 11 पुरुष और 1 अकेली नारी। यही नहीं, सभी पुरुष विमान–चालन में अनुभवी, ढाई से 5,000 घंटे उड़ान का रिकॉर्ड रखने वाले और महिला नौसिखिया, मुश्किल से 100 घंटे उड़ान भरी थी तब तक उसने। दौड़ थी कलकत्ता से जमशेदपुर, जमशेदपुर से आसनसोल और वहां से वापस कलकत्ता। सबसे आगे निकलकर अपने विमान को सर्वप्रथम सुरक्षित उतारने वाली यह महिला थीं– कुमारी प्रेम माथुर: भारत की पहली महिला व्यावसायिक पायलट।

विमान से उड़ने और शौक के लिए विमान चलाना सीखने में तो भारतीय महिलाओं ने प्रारंभ से ही रुचि ली है। सन् 1929 में लेडी दिनशा पैट्रिट ने अपने भाई श्री जे.डी. टाटा से विमान चलाना सीखा था। उसके बाद भी टाटा परिवार की एक महिला तथा कुछ रानियों द्वारा विमान चलाने का उल्लेख मिलता है। कुल मिलाकर अब तक लगभग 100 महिलाएं इस ओर कदम उठा चुकी हैं और अब अंतर्राष्ट्रीय महिला विमान चालक संघ– 'नाइंटी नाइंस' की एक शाखा के रूप में बंबई में भारतीय महिला विमान चालकों का एक छोटा सा संगठन भी काम कर रहा है। किंतु कैरियर की दृष्टि से तब तक केवल दो ही भारतीय महिलाएं इस क्षेत्र में प्रविष्ट हुई थीं। पहली– प्रेम कुमारी माथुर और दूसरी–कुमारी दूर्वा बैनर्जी, जो पांच वर्ष बाद इस क्षेत्र में प्रविष्ट हुई थीं। 'बी' लाइसेंस प्राप्त कर पूर्णरूपेण व्यावसायिक विमान–चालक बनने में पहल करने का श्रेय कुमारी प्रेम माथुर ने ही प्राप्त किया था।

पायलट बनने पर उन्हें देश–विदेश से अनेक बधाई संदेश मिले। 20 जुलाई, 1948 को मॉस्को से श्रीमती विजयक्ष्मी पंडित का उल्लास–प्रोत्साहन भरा पत्र मिला था। सन् 1950 में राष्ट्रीय विमान दौड़ प्रतियोगिता में प्रथम आने पर तत्कालीन वायु सेनाध्यक्ष जनरल करियप्पा ने उन्हें बधाई संदेश भेजकर प्रोत्साहित किया था। प्रतियोगिता के 3,000 के पुरस्कार के अतिरिक्त उन्हें ढेरों प्रशंसा-पत्र और उपहार मिले थे। इसी शानदार विजय पर सन् 1955 में अंतरराष्ट्रीय संस्था 'नाइंटी नाइंस' द्वारा उन्हें 5,000 डॉलर का पुरस्कार प्रदान करने की भी घोषणा की गई, किन्तु इन सबके बावजूद उनकी प्रगति की कहानी एक निरंतर संघर्ष और मूक वेदना की कहानी बन गई। कुमारी प्रेम माथुर के शब्दों में– "महिला विमान उड़ा सकती है, उड़ान में पुरुषों से ज्यादा सावधानी बरत सकती है, रॉकेट में बैठकर अंतरिक्ष यात्रा कर सकती

है; पर एक यात्री विमान की कैप्टन पायलट नहीं बन सकती। विश्व में अभी तक कोई नहीं बन सकी, क्योंकि यात्री उस विमान में चढ़ने से घबराते हैं जिसकी कमान एक महिला के हाथ में हो और अधिकारी समझते हैं कि महिला होने के नाते आपात स्थिति में वह घबरा जाएगी और विमान को शायद संभाल नहीं पाएगी। शीला स्कॉट ने विमान में अकेले विश्व यात्रा की। बेलेंतिना तेरेश्कोवा ने अंतरिक्ष की खोज में उड़ान भरी, पर वे अकेली थीं। साथ में अन्य यात्री नहीं थे। द्वितीय विश्व युद्ध में महिलाओं ने युद्ध विमान भी उड़ाए, पर यात्री विमानों में अभी तक किसी भी महिला को कैप्टन पायलट का स्थान नहीं दिया गया।"

अपने इस क्षेत्र में आने और आगे के संघर्ष की कहानी सुनाते हुए उन्होंने कहा था,– "मेरे बड़े भाई पायलट थे और उनसे छोटे हवाई जहाजों का व्यापार करते थे। आठ वर्ष की अवस्था से ही मुझे अपने बड़े भाई के साथ वायुयान में उड़ने का अवसर मिला और यह शौक धीरे–धीरे बढ़ता गया। मन में इच्छा जागती कि मैं भी भाई साहब की तरह वायुयान चलाऊं और आकाश में उन्मुक्त पक्षी की तरह विचरण करूं। पर हिम्मत करके बात करती तो भाई टोक देते, 'यह लड़कियों का काम नहीं है।' बात ठीक भी थी। तब ऐसी कल्पना भी संभव न थी। विवश हो चुप रह जाती।

"लेकिन चाह को राह मिल ही जाती है। इसे मेरा सौभाग्य ही कहना चाहिए कि मेरे दूसरे भाई ने एक वायुयान का सौदा किया और उसे श्रीलंका पहुंचाने का काम सुंदर लाल अटल नाम के एक युवक पायलट को सौंपा। यह अटल साहब हमारे घर ही ठहरे थे। मैं उस समय बी.ए. में पढ़ रही थी। एक दिन उन्होंने कहा, 'चलो, तुम्हें वायुयान की सैर करा लाऊं। जहाज उड़ाने में उन्होंने मेरी इच्छा देखकर मुझे यंत्रों की जानकारी दी और उन्हें संभालने के लिए कहा। मैं बिना झिझके या घबराए उन्हें संभाल रही थी। यह देखकर वह आश्चर्यचकित हो बोले, 'प्रेम, तुम पायलट क्यों न बनो!'

"अंकुर फूट गया था। उनके इन शब्दों पर विश्वास न करते हुए भी मैं पायलट बनने का सपना देखने लगी। घर पर चर्चा चली तो बड़े भाई साहब ने फिर झटक दिया। पर श्री अटल के समझाने पर पिताजी सहमत हो गए। फिर सन् 1948 में इलाहाबाद में 'हिंद फ्लाइंग क्लब' खुल जाने से मेरे जीवन का भी नया अध्याय शुरू हो गया। मैं क्लब की सदस्या बन गई, पर प्रारंभिक 'ए' लाइसेंस प्राप्त करने के लिए भी बड़ी तपस्या करनी पड़ी। कई–कई घंटे हवाई अड्डे पर प्रतीक्षा करने के बाद मुझे जहाज उड़ाने के लिए मिलता। वे लोग समझते, शौक पूरा करना चाहती हूँ, ट्रेनिंग लेना नहीं। बहुत श्रम व प्रतीक्षा के बाद ही मैं इसमें सफल हो सकी।

"1950 में विमान दौड़ प्रतियोगिता में प्रथम आने पर यह उत्साह और बढ़ गया। लखनऊ फ्लाइंग क्लब में उड़ान के घंटे पूरे करने के बाद सन् 1951 में मैंने 'बी' लाइसेंस प्राप्त कर लिया, जिसका अर्थ होता है– व्यावसायिक जहाजों के चालन की प्रामाणिक योग्यता। सपना पूरा हुआ। अब मैं पूरी तरह कमर्शियल पायलट कहलाने योग्य थी। पर उत्साह की बढ़ती मात्रा यहां आकर रूक गई। आगे की कहानी हीनता और निराशा की कहानी बन गई।

"जहां भी मैंने नौकरी के लिए प्रार्थना–पत्र दिया, उत्तर इनकार में मिला। 'भारत की प्रथम महिला व्यावसायिक 'पायलट' होने के नाते मुझे ख्याति मिली, प्रशंसा मिली; पर 'पहला कदम' कितना कठिन होता है, यह पायलट बनने के बाद ही पता चला। मैं इसे कैरियर बनाना चाहती थी नौकरी चाहती थी–पर अधिकारीगण मुझे केवल शौक पूरा करने का निःशुल्क अवसर प्रदान करने की उदारता ही दिखाते थे। बड़ी कठिनाई के बाद 'दक्कन एयरवेज' ने डकोटा में मुझे सह–चालक के रूप में लेना स्वीकार किया, वह भी बिना वेतन के। छह महीने काम करके मैंने छोड़ दिया।

"हवाई कंपनियों का राष्ट्रीयकरण हो जाने के बाद मैंने आवेदन किया तो वहां भी अवैतनिक रूप से सह-चालक का काम ही मिला। उत्तर मिलता, 'कुमारी जी, संसार में कहीं भी किसी महिला को कैप्टन पायलट नहीं बनाया गया, आप कैसे आशा करती हैं? यात्री विमान की उड़ान के लिए कोई भी वायुयान कंपनी अकेले किसी महिला पर विश्वास नहीं कर सकती। इस प्रकार 'बी' लाइसेंस पाने व दो सौ पचास उड़ान घंटे पूरे करने के बाद भी मुझे सवेतन काम नहीं दिया गया। इसके एक वर्ष बाद श्री जी.डी. बिरला के निजी डकोटा में ही मुझे सर्विस मिल सकी। वहां मैंने छह वर्ष तक 'को-पायलट' के रूप में सवेतन काम किया। कैप्टन-पायलट बनने की हसरत थी, पर पूरी नहीं हो सकी।"

अपनी इस पहली सवेतन नौकरी की चर्चा करते हुए उन्होंने एक कार्मिक अनुभव सुनाया, "मुझे पिलानी से वायुयान के मालिक बिरलाजी को लेकर बंबई पहुंचना था। पिलानी पहुंचकर मैं 'कॉकपिट' से बाहर नहीं निकली। सोचती थी, मेरी यह नौकरी भी निश्चित नहीं है। पता नहीं एक धनी उद्योगपति महिला-चालित विमान में अपनी यात्रा सुरक्षित समझे या नहीं? पता नहीं मुझे देखकर उनकी क्या प्रतिक्रिया हो? पर बाद में लगा, मेरा यह भय निराधार था।"

सचमुच ही उनका यह भय पूर्व अनुभव पर आधारित था, जो बाद में बिलकुल निराधार साबित हुआ। कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में जब कुमारी माथुर तत्कालीन अध्यक्ष श्री ढेबर के साथ सर्वश्री लाल बहादुर शास्त्री, गुलजारीलाल नंदा, जगजीवन राम, स्वर्णसिंह, श्रीमन्ननारायण जैसे मंत्रियों व महत्वपूर्ण व्यक्तियों को विशेष वायुयान 'गगन बिहारी' में लेकर दिल्ली से कलकत्ता पहुंचीं तो वहां पत्रकारों द्वारा उनका आश्चर्य व हर्ष-मिश्रित स्वागत किया गया। लेडी माउंटबेटन, इंग्लैंड के श्रम मंत्री श्री बेविन व उनकी पत्नी, श्री मोरारजी देसाई व इंदिराजी भी प्रेम द्वारा चलाए गए वायुयान पर यात्रा कर चुके हैं। कभी कोई संदेह प्रकट नहीं किया गया। इससे धीरे-धीरे उनमें आत्मविश्वास बढ़ा, पर 'कैप्टन-पायलट' का चांस उन्हें फिर भी नहीं मिला। फिर मार्च 1965 से रिटायर होने तक उन्होंने 'इंडियन एयरलाइंस कॉरपोरेशन' में सहायक वायु सुरक्षा अधिकारी के रूप में कार्य किया। शौक के लिए कभी भी उड़ान भर लेती थीं; पर उनमें पहले जैसा उत्साह अब नहीं रहा था।

कुमारी प्रेम माथुर इलाहाबाद के एक प्रिंसिपल की पुत्री हैं। माँ शैशव में ही छोड़कर चल बसी थीं। पांच भाई-बहनों में वे सबसे छोटी थीं। उदार प्रकृति के पिता ने पुत्र की तरह उन्हें पाला-पोसा और पढ़ाया। बचपन से ही लड़कों जैसे खेल खेलती थीं। शिक्षा भी सह-शिक्षा संस्था में हुई, जो उन्हें निडर व साहसी बनाने में सहायक हुई। एनी बेसेंट स्कूल व सेंट मेरी कॉन्वेंट से जूनियर कैंब्रिज तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद मैट्रिक प्राइवेट किया। फिर इंटरमीडिएट व बी. ए. इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से की। कॉलेज में भी तैराकी व खेलों में सदा आगे रहतीं। सन् 1942 के 'भारत छोड़ो' आंदोलन में भी खूब भाग लिया, पर लड़कियों की तरह संगीत और घर के काम-काज में रुचि कम न थी। बी.ए. में पहुंचकर जब विमान-चालन की ओर झुकीं, तब तो पढ़ाई से बचा लगभग सारा समय इसी में बीतने लगा। दूसरे क्लब, सोसाइटियां छोड़कर फ्लाइंग क्लब की उनकी रुचि का प्रमुख केंद्र बन गया और श्री अटल की प्रेरणा, पिता के प्रोत्साहन एवं बड़े भाई के निर्देशन में वह आगे बढ़ती गईं।

उनके धैर्य व साहस की एक-दो घटनाएं उल्लेखनीय हैं। सन् 1950 की विमान दौड़ प्रतियोगिता में जीत के बाद 1951 की प्रतियोगिता के लिए उन्हें फिर निमंत्रित किया गया; किंतु उन्होंने इंकार कर दिया। लखनऊ फ्लाइंग क्लब के इंस्ट्रक्टर उनके बड़े भाई, जिनका रिकॉर्ड 6,000 घंटे उड़ान का था, स्वयं उसमें एक प्रतियोगी थे और कुमारी प्रेम को उनके जीतने की पूरी आशा थी। उन दिनों वह 'बी' लाइसेंस के लिए तैयारी भी कर रही थीं। 17 फरवरी को प्रतियोगिता हुई। दौड़ के प्रारंभ में उनके भाई ने विभिन्न कलाबाजियां दिखाकर अपना कौशल प्रदर्शित करना चाहा कि दुर्घटना घट गई। प्रेमजी व अन्य संबंधियों की उपस्थिति में उनका जहाज नीचे आ गिरा। जीत की आशा गहरे शोक में बदल गई। इससे ठीक दो दिन बाद 19 फरवरी को ही कुमारी प्रेम माथुर की 'बी' लाइसेंस की परीक्षा थी। सबको लग रहा था कि इस दुर्घटना से प्राप्त घबराहट और शोक की छाया में वह असफल न हो जाएं; पर कुमारी प्रेम ने असीम धैर्य और दृढ़ता का परिचय दिया, सफल हुईं और लाइसेंस प्राप्त किया।

वायुयान चलाते समय दो बार वह खराब मौसम के कारण खतरे में फंस गई थीं-एक बार श्री बिरलाजी व मोरारजी देसाई को बंबई, सांताक्रुज पर उतारते समय तथा दूसरी बार इंदिराजी (प्रधानमंत्री बनने से पूर्व) को दिल्ली से इलाहाबाद ले जाते समय। पर दोनों बार उनके धैर्य व साहस ने उनका साथ दिया और वायुयान सकुशल नीचे उतार लिया गया।

पुरुषों की तरह साहसी और निडर प्रेमजी बंदूक की निशानेबाजी में भी रुचि रखती हैं; पर उनसे मिलने और बातचीत करते समय ऐसा कभी नहीं लगा कि इससे उनके नारीत्व को कोई क्षति पहुंची है। बातचीत में मधुर और स्वभाव से कोमल यह नारी किसी सामान्य कामकाजी नारी से अपेक्षाकृत अधिक मीठा और धीरे बोलने वाली है। इसलिए जब वह बताती हैं कि बचपन से वह लड़कों के साथ खेली व पढ़ी हैं और साहस के कार्य उनकी प्रिय 'हॉबी' रहे हैं तो सहसा उस पर विश्वास नहीं होता। उनकी सफलताओं पर विश्वास करने के बाद भी लगता है, कहीं पर उनकी 'नारी' उनके 'पायलट' से फिर भी प्रबल है। तभी तो उड़ने-उड़ाने का, 'नाइंटी-नाइंस' की सदस्यता का मोह त्यागकर वायु सुरक्षा सहायक अधिकारी की कुर्सी पर जा बैठीं, अन्यथा कैप्टन-पायलट न सही, फ्लाइंग क्लब की इंस्ट्रक्टर तो बन ही सकती थीं। 'सोलो फ्लाइंग' (पहली अकेली उड़ान) में जरा भी न घबराने वाली, आठ प्रकार के जहाजों पर पहले वर्ष में ही कलाबाजियां दिखाने वाली और केवल 100 उड़ान घंटों के अनुभव पर ही प्रतियोगिता में कुशल चालक पुरुषों से बाजी मार ले जाने वाली पायलट के लिए विमान-चालन का कार्य संभाल लेना आश्चर्य की ही बात थी। पर उनके कटु अनुभवों से परिचत होने पर आश्चर्य नहीं लगता। कटु अनुभवों की इस श्रृंखला का एक मार्मिक उदाहरण है-

'नाइंटी नाइंस' क्लब का 5,000 डॉलर का पुरस्कार लेने कैलीफोर्निया न जाना, केवल इसलिए कि उनके जाने की कहीं से व्यवस्था न हो सकी और वह स्वयं अपने खर्च से जाने में असमर्थ थीं। इस प्रकार न जा पाने के कारण वह इस पुरस्कार राशि से भी वंचित रह गईं।

कुमारी माथुर के शब्दों में-"पिताजी ने सर्विस के साथ पुस्तकें लिख-लिखकर कड़ी मेहनत से कमाए पैसों से मुझे पढ़ाया, मेरे विमान चलाने के शौक पर हजारों रुपए व्यय किए तो बाद में यह संभव न था कि मैं पायलट बनने के बावजूद शौकिया अवैतनिक काम करती रहती और उन पर बोझ बनी रहती। इंस्ट्रक्टर का काम मुझे पसंद नहीं था और कैप्टन-पायलट बनना भाग्य में नहीं था।" और फिर उनकी नारी बोल पड़ी, "शौक के लिए ठीक है। कैरियर बनाना स्त्रियों के लिए कठिन ही है।"

"क्यों? इतनी कठिनाइयों पर विजय पाने के बाद भी आपकी यह धारणा क्यों?" मेरे इस प्रश्न के उत्तर में उनके भीतर की 'नारी' और पायलट में कुछ कहा-सुनी हुई, थोड़ी देर खामोशी रही और फिर दोनों में समझौते का संकेत देती एक मिश्रित-सी वाणी गूंजी, "इसलिए कि इसके लिए अच्छा स्वास्थ्य, बहुत अच्छी दृष्टि, पुरुषोचित साहस चाहिए। ये सब जुट जाएं तो भी परंपरा आड़े आएगी। पर परंपराएं बदलती भी हैं। निर्भीकता, लगन और निष्ठा से ही उन्हें बदला जा सकता है। कुमारी दूर्वा बैनर्जी भी को-पायलट के रूप में ही कार्य कर रही हैं। हो सकता है, कल को उन्हें या किसी और महिला को कैप्टन-पायलट बनने का अवसर मिल जाए। फिर भी, मानना होगा कि सामान्य नारी के लिए यह क्षेत्र नहीं है।"

लेकिन मैं समझ नहीं पाई कि इस दुविधापूर्ण मिश्रित वाणी को मैं नारीत्व की जीत मानूं या परिस्थितियों द्वारा नारीत्व पर चोट, जिसने एक पायलट की जीत को नारी-पायलट की हार में बदल दिया?

अब तो सुश्री प्रेम माथुर अपनी नौकरी से अवकाश ग्रहण कर चुकी हैं। सन् 1984 में जब वह सेवानिवृत्त हुईं, तब 'डिप्टी मैनेजर फ्लाइट सेफ्टी' के पद पर काम कर रही थीं। अपने काम के प्रति समर्पण के कारण उन्होंने विवाह नहीं किया तो अब रिटायर होने पर कैसा अनुभव करती हैं? पूछने पर उनका उत्तर था, "छूटे संगीत का शौक पूरा कर रही हूँ। जो एयर पास मिलते हैं, उनका उपयोग कर भारत-भ्रमण कर रही हूँ। फुरसत का समय पढ़ने और मित्र-मंडली में गुजारती हूँ। फिर भी कभी-कभी सन्नाटा काटने दौड़ता है। मैंने फ्लाइंग क्लब के अध्यक्ष से दो बाद अनुरोध किया कि वेतन न देकर केवल वाहन अलाउंस पर ही मुझे काम करने का चांस दिया जाए; पर मेरी प्रार्थना पर गौर नहीं किया गया। आजकल अवसर नए युवा लोगों के लिए ही नहीं।" यही नहीं, देश के वर्तमान हालात तथा नए क्षेत्रों में आने वाली प्रवृत्तियों में से अधिकांश की नैतिक सरोकारों के प्रति बेपरवाही से भी वह काफी क्षुब्ध लगीं।

◆◆◆

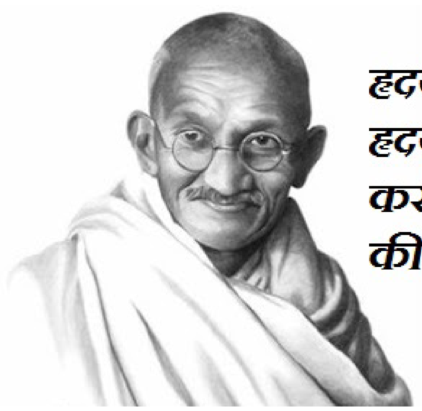

हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय-हृदय से बातचीत करता है और हिन्दी हृदय की भाषा है।

महात्मा गाँधी

मां.....

सबसे दूर रह जाऊं मैं
पर तुझसे दूर रह ना पाऊं मैं,
जाऊं जहां भी, पाऊं सिर्फ तुझे ही.....
तेरी हर इक सांस को....
तेरे हर इक एहसास को
हर पल महसूस करूं मैं
तेरे सीने से चिपकाना,
ममता भरे आंचल तले सुलाना
बहुत याद आती है मां.....
होती थी कभी परेशान तो
तेरा सिर पर हाथ फेरना ही होता था काफी,
अगर आये ना नींद कभी तो
तेरी लोरियों के साथ थपकियां ही होती थी काफी,
आंखों में आये कभी आंसू तो
तेरा प्यार से पुचकारना ही होता था काफी,
तेरे सिवा कौन देगा ऐसा प्यार, ऐसी दुलार मेरी मां.....
मां .... ऐसा क्यों लगता कि तू दूर होके भी पास है,
मेरी हर सांस में तेरे आने की इक आस है.....
मां........तू ही क्यों इतनी अच्छी होती है,
गुस्सा होके भी गुस्सा क्यों नहीं रहती है,
करती क्यों है अपने बच्चों से प्यार इतना.....
सहती क्यों है उनके लिए दर्द इतना.....
आती है उनपर कभी तुफान रूपी मुसीबतें
तो तू उससे भी लड़ जाती क्यों.....
अपनी जान की भी परवाह ना करके
ऐसी बाजी लगातीं क्यों.....
तुझे दया की मूर्ति कहूं या धरती की शान कहूं.....
होगी बेईमानी मेरी, अगर शब्दों में तुझे पिरोऊं
मां...... कहूं क्या तेरे लिए......
तू तो अनंत है...........
रहना तुम जहां भी मां
छोड़ना ना कभी साथ मेरा....
किसी ना किसी रूप में हमेशा
रहना मेरे ही संग मेरे ही साथ मेरी मां......

– पूजा कुमारी
अवस्थापना प्रभाग,
डी.ई.ओ.

भारत की प्रथम महिला

विजयलक्ष्मी पंडित

प्रथम मंत्री, राजदूत, राष्ट्र संघ अध्यक्षा

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित भारत की अग्रिम पंक्ति की ऐसी महिला थीं, जिन्होंने एक साथ कई क्षेत्रों में पहल की। वह 'प्रथम महिला मंत्री', 'प्रथम महिला राजदूत' और भारत की प्रथम नारी थीं, जिन्हें संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी संस्था की अध्यक्षा बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

स्वतंत्रता संग्राम में निरंतर भाग लेने के बाद सन् 1937 में जब पहली बार राज्यों में कांग्रेसी मंत्रिमंडल बने तो श्रीमती पंडित स्थानीय प्रशासन और जल स्वास्थ्य मंत्री के नाते संयुक्त प्रांत (आज के उत्तर प्रदेश) के मंत्रिमंडल में सम्मिलित हुईं। तब मंत्री के रूप में वे देश की प्रथम महिला थीं। भारत के इतिहास में यह सर्वथा नवीन घटना थी, जिसने भविष्य के लिए भी मार्ग खोल दिया। श्रीमती पंडित सन् 1946 में भी उत्तर प्रदेश के मंत्रिमंडल की सदस्या रहीं।

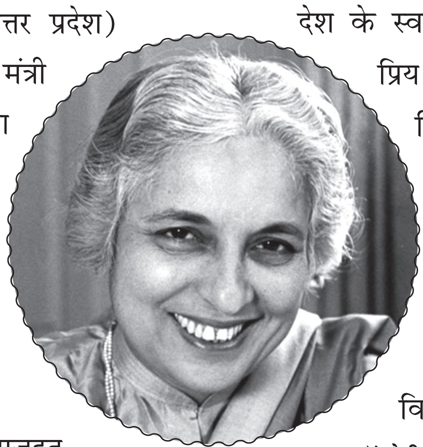

सन् 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ तो राजदूत बनाकर रूस भेजी गईं। इस पद पर वे भारत की ही नहीं, विश्व की भी प्रथम महिला थीं। डेढ़-दो वर्ष वहाँ रहने के बाद वापस आकर सन् 1949 से 1952 तक फिर अमेरिका में भारतीय राजदूत रहीं। समय-समय पर संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत का योग्य प्रतिनिधित्व भी करती रहीं। वहाँ अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व से श्रीमती पंडित ने प्रतिनिधियों को इतना प्रभावित किया कि वे भारत और नेहरू की विदेश नीति के प्रशंसक हो गए। फलस्वरूप सन् 1953 में संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा की अध्यक्षा चुन ली गईं। इस पद पर आने के बाद यह तीसरा अवसर था, जब उन्हें भारत ही नहीं, विश्व की 'प्रथम महिला' कहलाने का गौरव प्राप्त हुआ। एक वर्ष के अपने कार्यकाल में विश्व की इस सर्वोच्च संस्था के अध्यक्ष पद को कुशलता से संभालकर उन्होंने अपने देश और देशवासियों का मस्तक ऊंचा किया। अमेरिका के बाद इंग्लैंड में राजदूत के रूप में रहीं।

विश्व के तीन बड़े देशों में भारत का कूटनीतिक प्रतिनिधित्व कोई कम गौरव की बात नहीं। श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित और भी अनेक कार्यों में अग्रणी रहीं। देश के स्वतंत्रता संग्राम में गांधीजी की जिन-जिन प्रिय शिष्याओं ने आगे बढ़कर सक्रिय भाग लिया था, उनमें श्रीमती सरोजिनी नायडू और विजयलक्ष्मी पंडित के नाम ही सर्वाधिक ख्याति प्राप्त हैं।

पंचायत राज बिल प्रस्तुत करने का श्रेय भी उन्हें प्राप्त है। भारतीय और विदेशी विश्वविद्यालयों से जितनी (पंद्रह) ऑनरेरी डिग्रियां उन्हें प्रदान की गईं, उतनी शायद ही किसी अन्य महिला को प्राप्त हुई हों। एक रोचक तथ्य और भी कि सन् 1966 में ब्रिटेन के एक प्रमुख समाचार-पत्र ने संसार के हर कोने में फैले अपने पाठकों के वोट से जब विश्व की सर्वाधिक आकर्षक महिला का चुनाव किया तो कलात्मक और सुरुचिपूर्ण वेशभूषा वाले नारी व्यक्तित्व में ही इन्हीं का नाम सर्वप्रथम रहा।

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित का व्यक्तित्व था ही ऐसा प्रभावी। उनका बचपन का नाम स्वरूप कुमारी था।

कृष्णा इठीसिंह (छोटी बहन) अपनी आत्मकथा में लिखती हैं– "मेरी बहन स्वरूप बहुत ही सुंदर थीं। उन्हें सब प्यार करते थे। मैंने भी यह मान लिया था कि जो इतना सुंदर हो, उसे सबका लाड़-प्यार मिलना चाहिए। इसलिए मुझे उनसे कभी ईर्ष्या नहीं हुई थी। मैं भी उन्हें बहुत ज्यादा चाहती थी।" सन् 1900 में जब उनका जन्म हुआ तो जवाहरलाल जी ग्यारह वर्ष के थे। श्री नेहरू ने भी अपनी आत्मकथा में लिखा है– "स्वरूप के पैदा होने से मुझे बड़ी खुशी हुई कि मुझे भैया कहने वाली एक प्यारी सी बहन आ गई।" स्वरूप सुंदर भी थीं, चपल भी। चार-पांच वर्ष की उम्र में ही फर्राटे से अंग्रेजी में बात करती हुई भाई के साथ घुड़सवारी करने लगी थीं। इसी उम्र में सन् 1904 में पिता के साथ यूरोप घूम आई थीं। फिर दोबारा सन् 1926 में पति और भाई के साथ गईं। इसके बाद तो विजयलक्ष्मी का जीवन एक अंतरराष्ट्रीय जीवन ही कहा जा सकता है।

श्री नेहरू की तरह स्वरूप कुमारी का पालन-पोषण, शिक्षण और रहन-सहन भी पाश्चात्य ढंग से हुआ। सन् 1919 में उनका विवाह एक गुजराती विद्वान् श्री रणजीत पंडित से हुआ। विवाह के बाद वे स्वरूप कुमारी नेहरू से विजयलक्ष्मी पंडित कहलाईं। श्री पंडित आजादी की लड़ाई में उनके साथ थे। सन् '42 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' के कुछ समय बाद उनका निधन हो गया। तीन लड़कियों के पालन-पोषण का भार विजयलक्ष्मी पंडित पर आ पड़ा। ससुराल वालों ने पुत्रहीना विधवा और उसकी पुत्रियों को संपत्ति में कोई हिस्सा देने से इनकार कर दिया, क्योंकि भारतीय उत्तराधिकार कानून में नारी के लिए इस तरह की कोई व्यवस्था न थी। एक तो पति-वियोग का दु:ख, दूसरे रूढ़िवादी नारी-विरोधी भारतीय कानूनों के प्रति आक्रोश। विजयलक्ष्मी क्षोभ से भर उठीं। फिर तो उनके भीतर की देशभक्त और विद्रोहिणी नारी देश की आजादी के साथ भारतीय नारी को इन क्रूर व निकम्मे कानूनों के चंगुल से बचाने के लिए भी कमर कसकर तैयार हो गईं। कांग्रेस के अलावा अनेक महिला संस्थाओं और समाज कल्याण संस्थाओं से संबद्ध रहकर भारतीय नारी की स्थिति और सामाजिक नीतियों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए निरंतर काम करती रहीं। 'अखिल भारतीय महिला सम्मेलन' के साथ तो वे प्रारंभ से ही थीं और सन् 1940-42 में दो वर्ष तक इस सर्वोच्च महिला संस्था की अध्यक्षा भी रह चुकी थीं।

गांधीजी से उनकी पहली भेंट सन् 1919 में हुई थी। गांधीजी के जीवन-पर्यंत उनके निकट रहीं। उनसे वे इतनी अधिक प्रभावित थीं कि कई बातों में मतभेद के बावजूद उनके निर्देश के बिना कोई कदम नहीं उठाती थीं। पुलिस जब आनंद भवन पर छापे मारती थी, जबरन जुरमाने वसूलती थी या सम्मानित व्यक्तियों का अपमान करती थी तो स्वभावानुसार विजयलक्ष्मी क्रोध से भर उठती थीं; पर गांधीजी के निर्देश का ध्यान कर सब कुछ धैर्य व शांति से सहन कर लेती थीं। असहयोग आंदोलन के दिनों पिता व भाई के जेल जाने पर आनंद भवन, जो कि कांग्रेस का गढ़ था, के संचालन का भार उनके कंधों पर ही आ पड़ा था। नमक सत्याग्रह के दिनों में उन्होंने अपनी छोटी बहन और पुत्रियों को साथ लेकर विदेशी माल की दुकानों पर धरने दिए, जुलूसों का नेतृत्व किया। इसी तरह सन् 1932, 1941 व 1942 में तीन बार जेल गई थीं। सन् 1942-44 में जेल से रिहाई के शीघ्र बाद की एक घटना से तो उन्होंने सारे संसार का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया।

द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हो चुका था। जापान एटम बम के प्रहार से आत्म-समर्पण कर चुका था और हिटलर व मुसोलिनी का भी पतन हो गया था। मित्र राष्ट्रों की विजयिनी सेनाएं जर्मनी और इटली में प्रवेश कर चुकी थीं। अंग्रेज विजय की खुशियां मना रहे थे, तभी सैनफ्रांसिस्को (अमेरिका) में 'संयुक्त राष्ट्र संघ' की स्थापना पर विचार करने के लिए स्वतंत्र राष्ट्रों की एक सभा बुलाई गई। देश के प्रमुख नेता-महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, डॉ. राजेंद्र प्रसाद जेलों में बंद थे। भारत प्रतिनिधि के रूप में अंग्रेजों द्वारा मनोनीत तीन व्यक्ति-सर फीरोज खां नून, सर रामास्वामी

अय्यर और सर गिरिजाशंकर वाजपेयी सभा में भाग लेने गए।

विजयलक्ष्मी पंडित का खून खौल उठा। 'ये कथित प्रतिनिधि', जो ब्रिटिश शासकों द्वारा नामजद हैं, स्वतंत्र राष्ट्रों की सभा में भारत की स्वाधीनता के लिए आवाज उठा सकेंगे? क्या किया जाए? पति रणजीत पंडित की हाल ही में मृत्यु हुई थी। श्रीमती पंडित का हृदय उनके वियोग और ससुरालवालों के व्यवहार से संतप्त था। पर देश का प्रश्न सामने था। स्वाधीनता की मांग प्रस्तुत करने का इससे अधिक अच्छा अवसर और कौन-सा हो सकता था? क्या करें वे? कैसे वहां पहुंचे? ब्रिटिश अधिकारी पासपोर्ट नहीं देंगे।

आखिर उन्होंने तरकीब ढूंढ़ निकाली। उनकी दो पुत्रियां उस समय अमेरिका में पढ़ रही थीं। उन्हें देखने के बहाने जल्दी में पासपोर्ट प्राप्त किया और बिना विशेष तैयारी के उड़कर वहां पहुंच गईं। शीघ्रता में पूरे कपड़े भी नहीं ले जा सकीं। तब साड़ी वहां सुलभ न थी। गाउनों को काट-जोड़कर, किनारी लगाकर उन्हें ही साड़ी के रूप में पहनकर काम चला लिया गया। एक तो आकर्षक प्रभावशाली महिला, ओजस्वी वक्ता, उस पर जवाहरलाल नेहरू की बहन-जहां भी सभा में उनका भाषण होता, भीड़-उमड़ पड़ती। अमेरिका की स्वतंत्र भूमि में उन पर कोई प्रतिबंध नहीं लगा सकता था। सभा भवन के बाहर जगह-जगह सभाएं करके उन्होंने घोषित किया कि भारत का प्रतिनिधित्व स्वतंत्र भारत के लोग ही कर सकते हैं, अंग्रेजों के नामजद प्रतिनिधि नहीं। सभी समाचार-पत्रों में श्रीमती पंडित के चित्र और भाषण बड़े-बड़े शीर्षकों में छपे। एक तहलका मच गया, पर चर्चिल सरकार चाहकर भी वहां उन्हें गिरफ्तार नहीं कर सकती थी। कॉन्फ्रेंस वाले दिन अंग्रेजों के दमनकारी कारनामों और भारत की मांगों की एक विस्तृत तालिका छपवाकर वहां पधारे सभी देशों के प्रतिनिधियों को दी गई। फिर एक परिवर्तन आया। वह अभी अमेरिका में ही थीं कि इंग्लैंड में टोरी सरकार का पतन हो गया और लॉर्ड एटली के नेतृत्व में मजदूर दलीय सरकार सत्तारूढ़

हुई। इसके बाद भारत में सारे नेता जेल से रिहा कर दिए गए। भारत लौटकर सन् 1946 में श्रीमती पंडित एक बार फिर चुनाव जीतकर उत्तर प्रदेश के मंत्रिमंडल में शामिल हुईं। फिर स्वाधीनता के बाद सन् 1947 से 1952 तक रूस व अमेरिका के लिए राजदूत नियुक्त कर दी गईं।

सन् 1952 के प्रथम आम चुनाव में लखनऊ लोकसभा के लिए निर्वाचित हुईं। सन् 1954 तक संसद सदस्य के रूप में काम करने के बाद फिर इंग्लैंड में उच्चायुक्त बनीं तथा वहां से लौटकर महाराष्ट्र की राज्यपाल नियुक्त हुईं। महाराष्ट्र की राज्यपाल रहते हुए एक बार फिर भारतीय प्रतिनिधिमंडल की नेत्री बनाकर उन्हें संयुक्त राष्ट्र संघ में भेजा गया। देशवासियों के मन में उनके ओजस्वी भाषणों की याद आज भी ताजा है।

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित की चुस्ती, जागरूकता, बौद्धिक क्षमता अंत तक हर किसी के लिए ईर्ष्या का कारण बनी रही। प्रधानमंत्री नेहरू के बाद सक्रिय राजनीति में आने के लिए वे महाराष्ट्र के राज्यपाल का पद त्याग नेहरूजी के रिक्त चुनाव क्षेत्र (फूलपुर) से चुनकर पुनः संसद में आ गईं। पर बाद के वर्षों में देश की स्थितियों-प्रवृत्तियों में आया परिवर्तन देख उनके मन को गहरी ठेस लगी। उन्हें बार-बार लगा कि इस आजादी के लिए तो उनके पूरे परिवार और हजारों-लाखों देशवासियों ने अपने जीवन न्योछावर नहीं किए थे। अतः एक लंबे मानसिक संघर्ष के पश्चात् उन्होंने लोकसभा की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया। इसके बाद उम्र के तकाजे को लेकर वे विश्राम कर रही थीं, पर उम्र से हार मानने वाली नहीं थीं। ब्रिटेन के उच्चायुक्त पद से अवकाश ग्रहण करने पर बी.बी.सी. के इंटरव्यू में एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा था, "मैं शांतिपूर्ण जीवन बिताना चाहती हूँ, 'रिटायर्ड' जीवन नहीं।"

अब वे हमारे बीच नहीं हैं। 01 दिसम्बर, 1990 को उनका निधन हो गया। अपने अंतिम समय में वे प्रचार से दूर देहरादून के अपने घर में कुछ आत्मीय मित्रों व लड़कियों के साथ शांत जीवन जी रही थीं- उस सुंदर घर में, जिसे उनकी सुरुचि अनुसार ला कारबूजिए ने डिजाइन किया था। पर उन्होंने सार्वजनिक जीवन पूरी तरह छोड़ा नहीं था। कभी-कभी महत्वपूर्ण समारोहों में शामिल होती रहीं। कभी वक्तव्य भी देतीं, पर अकसर चुप रहतीं। पूछने-कुरेदने पर कहतीं, "एक राजनीतिज्ञ के लिए चुप्पी क्या साधारण बात है? वह भी चोटी पर पहुंचने के बाद?" देहरादून में उनसे भेंट करने वाले उनके व्यक्तित्व से चमत्कृत होकर लौटते थे- खूब जानकारियों से लैस, प्रबुद्ध बातचीत, वैसी ही मजाकिया 'टोन', गहरी आंखों से देखना, भीतरी जीवंतता से चमकता धवल बालों वाला उजला चेहरा, जो सामने वाले पर अपनी अमिट छाप छोड़ता था। "पत्रों के उत्तर क्यों नहीं देतीं?" उपालंभ पर उनका उत्तर होता, "क्या होगा देकर? मित्रों के लिए वह जरूरी नहीं होता, शत्रुओं के लिए विश्वसनीय नहीं होता।" और इस व्यंग्य के साथ भी खुलकर हंसीं। इतने बुढ़ापे में भी ऐसी ही रही यह सदाबहार नारी। दुःख के क्षणों में भी हंसने वाली और गहरे मानवीय स्पर्शवाली, जो हर स्थिति में अपने आस-पास के वातावरण को जीवंत रखती थीं।

◆◆◆

***भारत माँ के भाल पर सजी स्वर्णिम बिन्दी हूँ**
मैं भारत की बेटी, आपकी अपनी हिन्दी हूँ....

लेख

अति उत्तम अधिकारी

एक भय सा था कैसा होगा, कैसा व्यवहार होगा, स्वभाव में कहीं बहुत कठोर तो नहीं होगा, पता नहीं उसके साथ काम कर पाएंगे भी या नहीं, हमारे द्वारा पुट अप की गई फाईलों पर पता नहीं कैसे रिमार्क्स देगा और न जाने कैसी-कैसी बातें मस्तिष्क में भरी थीं एक बड़े ही महत्वपूर्ण कार्यालय से प्रतिनियुक्ति आधार पर आने वाले एक उच्च अधिकारी के बारे में।

निश्चित समय पर वो अधिकरी कार्यालय पहुंचे कक्ष के सभी कार्मिक स्वागत हेतु कार्यालय द्वार पर मौजूद थे जैसी सोच थी उसी के मुताबिक उस अधिकारी के व्यक्तित्व पर पहली नजर पड़ी ऐसा प्रतीत होता था कि हमारी सोच और उसका व्यक्तित्व दोनों मेल खाते हैं भय की मात्रा कुछ और अधिक हो गई। सभी कार्मिक उस अधिकारी के पीछे उसके कक्ष की ओर बढ़े। धीरे-धीरे, कुछ रूकते-रूकते से कदम आगे बढ़ रहे थे ऐसा लगता था जैसे कदम भी सहम गए हैं।

कक्ष में उस अधिकारी के साथ सभी कार्मिक विराजमान हुए। परिचय का दौर शुरू हुआ परिचय के ही दौरान ऐसा प्रतीत होने लगा कि हमारी सोच की दिशा शायद कुछ गलत मंजिल की ओर है। कुछ उनके और कुछ अपने कार्यालय के बारे में चर्चाएं होती गईं और एक छोटे से ही अन्तराल में उस अधिकारी ने हमारी सारी सोचों को गलत साबित करते हुए एक ऐसे व्यक्तित्व, एक ऐसे परिपक्व एवं उत्तम अधिकारी के रूप में ला खड़ा किया जो कि हमारी कल्पना में भी नहीं था।

कार्य का दौर शुरू हुआ फाईलों के आदान-प्रदान के साथ सभी कार्मिक भय से नाता तोड़ते हुए निडर होकर कार्य करने लगे और कार्य का निर्वाह नियमानुसार एवं समयबद्ध होने लगा। सभी कार्मिक निडर एवं खुश होकर कार्य करने लगे।

एक अच्छे और उत्तम अधिकारी की यही पहचान है कि उससे जुड़े सभी कार्मिक खुश होकर अपने कार्यों का निर्वाह करें।

-वजाहत अली सिद्दीकी
प्रबन्धक (सतर्कता/शिकायत)

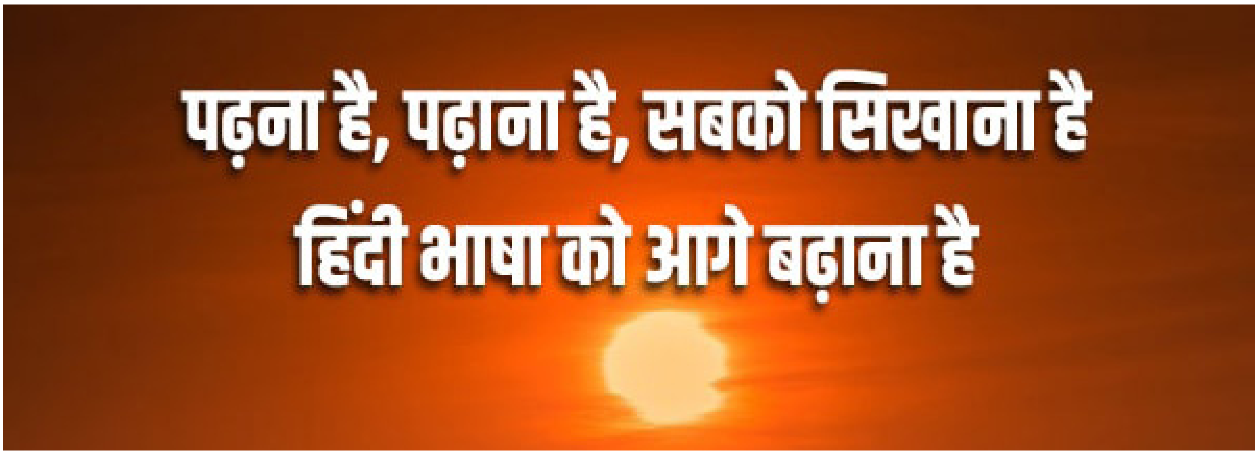

एक वरदान: स्वच्छ भारत अभियान

सालों से गांव-गांव व शहर-शहर भारत माता अपना चेहरा देख रही थी लेकिन उसकी नालायक संताने चेहरे के रूप में जहां देखो वहां केवल कचरे के दर्शन करा रही थी। वह तो भला हो उस चायवाले नेता का जिसने प्रधान सेवक बनते ही देशवासियों को बताया कि भारत माँ की परम सेवा उसकी स्वच्छता बनाये रखना है।

हाँ जी स्वच्छता जिसमें लक्ष्मी जी का निवास है, वही स्वच्छता जिसके डर से मच्छर, मक्खी से लेकर गंभीर बीमारियों के वायरस तक दूर रहते हैं, वही स्वच्छता जो किसी वस्तु पर आ जाये तो सुंदर लगने लगती हैं और तो सुंदरी पर आ जाये तो गुलाब का फूल। देश के प्रधानमंत्री ने स्वच्छ भारत अभियान से ये तो बता ही दिया कि वह देश के अब तक के सब से साफ-सुथरे प्रधान मंत्री हैं। इतने साफ है कि हर बार भाषण में दोहराते रहते हैं कि सरकार पर घोटाले का कोई दाग लगा हो तो बताइये।

बात भी सौ आने सच है पिछली सरकार में घोटलों के दाग इतने लगे कि जनता ने बहुत अच्छे ढंग से सरकार की सफाई कर दी और ऐतिहासिक कांग्रेस पार्टी ने लोकसभा में साफ-साफ दिखने वाली सीटें लेकर इतिहास रच दिया।

खैर स्वच्छ भारत का इरादा कर लिया हमने ये कहना आसान है लेकिन इरादे को कार्य में बदलना उतना ही मुश्किल है जितना एक अनाज्ञाकारी बहू से अपने सास-सुसर की सेवा करवाना।

वैसे आपने सुना होगा सेवा करने से मेवा मिलता है। हो सकता है यह सुना हुआ सुना सुनाया ही निकले लेकिन यह कदापि ना होगा कि आप अपनी धरती माँ को स्वच्छ रखने की सेवा करें और आपको मेवा न मिले। मेवा नहीं भैया आपको मिठाई मिलेगी। ना केवल आपको, आपके परिवार को, आपके दोस्तों को, देशवासियों को और इस धरती पर व्याप्त जीव-जन्तुओं को।

अत: निवेदन है कि देश को स्वच्छ बनायें, यह आपका है, हमारा है, हमारी आने वाली पीढ़ियों का हैं। सम्भव हो सके तो पॉलीथीन पर अपनी निर्भरता कम से कम करें।

उम्मीद है स्वच्छ भारत अभियान देश के लिए एक वरदान साबित होगा।

अत:

"सभी रोगों की
बस एक दवाई
घर में रखो
साफ-सफाई"

-शिवानी सिंगला
उप मुख्य अभियन्ता, चण्डीगढ़

जब होगी मन में निष्ठा, तब बढ़ेगी हिन्दी की प्रतिष्ठा

साभार : नवभारत टाइम्स

झुकने वाला व्यक्ति कभी छोटा या कमजोर नहीं होता

मनुष्य की सबसे बड़ी कमजोरी है उसका घमंड। अहंकारी व्यक्ति सोचता है कि यदि वह किसी के सामने झुक गया, तो लोग उसे छोटा और कमजोर समझकर उसकी उपेक्षा करेंगे। लेकिन जीवन की वास्तविकता यह नहीं है। झुकने वाला व्यक्ति कभी छोटा या कमजोर नहीं होता। वह और अधिक बड़ा तथा मजबूत बन जाता है। फल से लदी हुई डाल झुकी हुई होती है और बड़ी सहनशील भी। अहंकार और दंभ के कारण ही राजकुमार होते हुए भी दुर्योधन अपनी प्रभुता स्थापित नहीं कर सका। पद के अनुरूप प्रतिष्ठा अर्जित करना तो दूर, वह लोगों की नजर में भी गिर गया था। बड़ा तो वह है जो दूसरे के अधिकार की रक्षा करता है। दूसरे को सम्मान देकर अपने सम्मान को बढ़ाता है। दूसरे को नीचा दिखाकर हम कभी बड़े नहीं बन सकते।

अपने समय के मशहूर कवि रहीम बादशाह अकबर के दरबार में न केवल मंत्री के रूप में मौजूद थे बल्कि वे उनके नवरत्नों में भी एक थे। इतने ऊंचे पद पर होते हुए भी वह एक कच्ची झोपड़ी में ही रहते थे। वह बेहद सादा जीवन जीते थे। अपने वेतन का ज्यादातर हिस्सा वह दान-पुण्य आदि पर खर्च कर देते थे। अभिमान उन्हें छू तक नहीं गया था। अपनी गर्दन हमेशा नीची रखते हुए वह हरदम सरल ही बने रहते थे। एक बार किसी व्यक्ति ने उनसे पूछा- "इतने ऊंचे पद पर होते हुए भी आप सदा नीचे की ओर मुख क्यों किए रहते हैं? इतना अधिक दान-पुण्य करते हैं, फिर भी आपकी नजरें ऊपर की ओर क्यों नहीं उठतीं?" विनम्रता के धनी रहीम ने जवाब दिया- "देने वाला तो कोई और है जो दिन-रात भेजे जा रहा है। भ्रम में लोग मुझे श्रेय दे रहे हैं। इसलिए संकोच के कारण मेरी नजरें नीची ही रहती हैं।

भगवान बुद्ध के परम शिष्य आनंद ने एक बार डरते-डरते उनसे पूछा- "प्रभो, प्रवचन देते समय आप तो उच्च आसन पर बैठते हैं, लेकिन श्रोताओं को नीचे बैठकर सुनना पड़ता है। क्या यह गुरु शिष्य में भेद की स्थिति पैदा नहीं करता?" बुद्ध ने मुस्कराते हुए कहा- "आनंद, क्या तुमने कभी झरने का जल पिया है?" आनंद ने उत्तर दिया- "हां, अनेक बार पिया है गुरुदेव।" इस पर गुरुदेव ने कहा- "तब क्या तुमने देखा नहीं कि जल हमेशा ऊपर से नीचे की ओर ही गिरता है। उसे नीचे रहकर ही पीना पड़ता है। मान लो, तुम किसी पहाड़ी पर खड़े हो, तो क्या यह संभव है कि वहीं से नीचे बह रही नदी का जल पीने की तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाए?"

नीचे रहकर ही किसी वस्तु को प्राप्त किया जा सकता है। दार्शनिक रस्किन ने सच ही कहा है कि विनम्रता किसी भी महान व्यक्ति के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता होती है।

सरलता और शीघ्र सीखे जाने योग्य भाषाओं में हिन्दी सर्वोपरि है

साभार : कहावतों की कहानियां
लेखक : राधाकांत भारती

मन चंगा तो कठौती में गंगा

भक्त रैदास अपने घर के बाहर सड़क पर बैठकर जूते गांठा करते थे। एक दिन उसी रास्ते, किसी पर्व के अवसर पर, एक पंडितजी गंगा-स्नान के लिए जा रहे थे। चलते-चलते उनका जूता फट गया। मार्ग में मोची को पाकर जूता गंठवाने खड़े हो गए। रैदास पहले किसी दूसरे का जूता गांठ रहे थे। पंडितजी बोले, "भाई, मेरा जूता जल्दी गांठ दे, मुझे गंगाजी जाना है।"

रैदास ने कहा, "हाथ में लिया पहला काम पूरा करके बस आपका काम करता हूं। बैठ जाइए। जल्दी ही हो जाएगा।"

पहला काम निबटाकर रैदास मन लगाकर पंडितजी के जूते की सिलाई कर रहे थे। पंडितजी बोले, "अरे चमरू, इतना बड़ा पर्व है, हम लोग बीस-बीस कोस चलकर नहाने आए हैं, तेरे तो यह कोस भर पर गंगा है, क्या तू नहाने न जाएगा।"

रेदास काम को पूरा करते हुए बोले, "महाराज, मैं गरीब आदमी गंगा नहाता रहूं तो बाल-बच्चों की रोटी का ठिकाना लगना कठिन हो जाएगा।"

पंडितजी बोले, "तू गंवार है, तुझे आज के पुण्यपर्व के फल का पता नहीं, इसलिए ऐसा कहता है। वैसे तो तेरा न जाना ही ठीक है, चमार के गंगाजी में नहाने और उस जल के छींटे दूसरों को लगने-से अशुद्धता फैलेगी।"

रैदास ने इस ओर ध्यान न दिया और काम पूरा करके पंडितजी के आगे रख दिया। पंडितजी जेब से पैसे निकालकर रैदास को देने लगे। रैदास बोले, "महाराज, मैं आपसे मजूरी नहीं लेना चाहता, मेरा बस एक काम कर दीजिए।"

पंडितजी ने पूछा, "वह क्या?"

रैदास बोला, "ये दो सुपारी मेरी ओर से गंगाजी के भेंट चढ़ा दीजिएगा। लेकिन एक शर्त के साथ कि गंगाजी हाथ बढ़ाकर इन्हें लें तब।"

उसकी ऐसी ऐंठ पर पंडितजी मन में हंसे, पर रास्ता तय करने की जल्दी में तर्क-वितर्क में न पड़कर सुपारियां लेकर झोले में डाल लीं। घाट पर पहुंचकर नहाए-धोए, पूजा-पाठ किया। वापस लौटने को थे कि रैदास की दोनों सुपारियां याद आईं। सोचा लाओ, गंगाजी में फेंक चलें। पर रैदास के वचनों का स्मरण हुआ कि गंगाजी हाथ बढ़ाकर लें, तभी देना। रैदास ने यह बात कुछ ऐसे ढंग से कही थी कि पंडितजी उसे भूल नहीं सकते थे। पंडितजी को विश्वास तो न था कि ऐसा संभव भी हो सकता है, पर कहने में जाता ही क्या था। गंगाजी को सुनाकर बोले, "ये रैदास की दो सुपारियां हैं। उसने कहा है कि गंगाजी हाथ बढ़ाकर लें तो दे देना।"

उसी समय जल में एक सुन्दर कोमल हाथ ऊपर निकला और सादर सुपारी लेकर अंदर हो गया। फिर तुरंत दूसरा हाथ एक सोने का सुंदर मूल्यवान कंगन लेकर पानी से ऊपर उठा। साथ ही कोई कहता सुनाई दिया कि यह प्रसाद स्वरूप रैदास को देना और कहना कि तुम्हारी भेंट गंगा ने सप्रेम स्वीकार कर ली है।

इस चमत्कार ने ब्राह्मण को अचंभे में डाल दिया। मन में रैदास कें प्रति ईर्ष्या पैदा हुई। घर लौटते हुए राह में रैदास का घर पड़ा, पर वह वहां ठहरने क्यों लगा? सोने के कंगन को देखते ही उसके मन में लोभ आ गया था। घर पहुंचते ही कंगन ब्राह्मणी को दिखाया। देखकर वह खुश हो गई। ब्राह्मणी को सारी घटना भी सुनाई, पर कंगन की खुशी में ब्राह्मणी ने उस बात पर अधिक ध्यान नहीं दिया। वह मग्न थी कि यह कंगन पाकर उनका जन्म-दरिद्रय दूर हो जाएगा। सुन्दर रत्न जड़ा सोने का कंगन। उसकी कीमत का क्या ठिकाना। ब्राह्मणी पंडित से बोली, "इसे राजा के यहां ले जाकर भेंट करो, बड़ा इनाम मिलेगा। यह समझ लो कि अब भीख मांगने से हम लोगों का पिंड छूटा।"

विचार करके ब्राह्मण कंगन सहित राजा के दरबार में पहुंचे। राजा उस कंगन को भेंट स्वरूप पाकर बहुत खुश हुआ। पंडित को एक लाख रूपया पुरस्कार-स्वरूप देकर विदा किया। कंगन रानी के पास गया। देखकर वह उस पर लट्टू हो गई। हाथ में पहन कर देखा। सबने बड़ी तारीफ की। साथ ही उन्होंने कहा, "महारानी का दूसरा हाथ सूना लगता है।" राजा के पास इसकी सूचना पहुंची कि इसका जोडा चाहिए। फौरन पंडितजी तलब किए गए कि इसका जोड़ा लेकर आएं अन्यथा घर-बार लुटवाकर देश निकाला। राजा ही तो ठहरा, न उसे खुश होते देर लगती न कुपित होते। कहा भी है कि -

"राजा, जोगी, अग्नि, जल इनकी उल्टी रीत।
बचते रहिए गुनीजन, ये थोड़ी पाले प्रीत।"

पंडितजी घबराए हुए राजा के पास पहुंचे और कंगन पाने की सारी हकीकत कह सुनाई। राजा बोला, "रैदास से जाकर कहो, गंगाजी से इसका जोड़ा लाकर दे।"

पंडितजी लाख रूपया लिए रैदास के पास पहुंचे। एक लाख रूपया उसके सामने रखा और सब बीती बात सुनाई। साथ ही रोते हुए बोले, "भगत, किसी तरह मेरी जान बचाओ। गंगाजी के पास जाकर इसका जोड़ा लाकर दो। एक लाख तो यह लो और एक लाख का जोड़ा लाओगे उसका मिलेगा।

रैदास ने कहा, "महाराज, रूपयों की तो मुझे कोई आवश्यकता नहीं है, यह तो आप ले जाइए। गंगामाई मजूरी में खाने भर को देती ही है, और गंगाजी तक जाने का मेरे पास अभी समय नहीं है। मैं यों फिरता रहूं तो मेरे बाल-बच्चे भूखों मर जाएंगे। पर यह मैं अवश्य चाहता हूं कि आपको राजा का कोपभाजन न बनना पड़े।

इस पर ब्राह्मण उसके सामने बहुत गिड़गिड़ाकर बोला, "तो जैसा तुम्हें उचित जान पड़े वैसा करो। लेकिन यथाशीघ्र कोई उपाय करो, कहीं राजा कुपित न हो जाए और कोई अनिष्ट न कर डाले।"

यह सब सुनकर पंडितजी की हालत देखते हुए रैदास भगत ने अपनी उसी चाम भिगोने वाली कठौती पर कपड़ा डाला और बोले, "मन चंगा तो कठौती में गंगा।"

थोड़ी देर बाद कपड़ा उठाते ही उसमें से चमकता हुआ ठीक उसी तरह का जोड़ा कंगन दिखाई दिया। रैदास ने ब्राह्मण को कंगन देकर कहा, "अब आप जल्दी कीजिए।" ब्राह्मण ने रैदास से वह लाख रूपये रखने का बहुत आग्रह किया। परन्तु रैदास ने कहा, "मैं अपनी मेहनत मजदूरी से सुखी हूं, संतुष्ट हूं, मुझे ज्यादा की जरूरत नहीं है, बाकी गंगा मैया सब पूरा कर देंगी।

रैदास को लाख रूपये लौटाते देखकर ब्राह्मण आश्चर्य में पड़ गया। एक-एक पैसे में जूता गांठने वाला लाख रूपयों को ठुकरा रहा है। इसी से इसमें यह करामात है। यह संकल्प तथा समर्पण की भावना का चमत्कार है।

साभार : नवभारत टाइम्स

बदलाव की सबसे ज्यादा शक्ति प्रेम में ही होती है

एक अध्यापिका अपना अस्सीवां जन्मदिन मना रही थीं। उन्होंने अनेक वर्ष एक विद्यालय में अध्यापन कार्य किया था। उनसे मिलने से पहले, उस विद्यालय के अनेक छात्र गैर-सामाजिक गतिविधियों में लगे हुए थे। पर जब उस अध्यापिका ने वहां पढ़ाना शुरू किया, तो लोगों ने महसूस किया कि उन शिष्यों के व्यवहार में बदलाव आने लगा। धीरे-धीरे उन सब में गहन परिवर्तन हुआ। उनमें से कई शिष्य बड़े होकर अच्छे नागरिक बने। कई बाद में चिकित्सक, वकील, अध्यापक, अच्छे तकनीशियन और व्यापारी बने। लोगों ने देखा कि उस अध्यापिका ने अनेक बिगड़े हुए बच्चों की जिंदगी संवार दी।

स्वाभाविक था कि उनके अस्सीवें जन्मदिन पर उन्हें आदर- सम्मान देने के लिए और जो कुछ उन्होंने किया था, उसके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए उनके भूतपूर्व शिष्य बड़ी संख्या में उनके पास पहुंचे। उनमें से अनेक छात्र अपने परिवार के साथ आए। देखते-देखते वहां गणमान्य व्यक्तियों की काफी बड़ी भीड़ एकत्र हो गई। वह एक भव्य आयोजन में बदल गया। अखबार वालों ने इस विशाल जन्मदिन पार्टी के बारे में सुना, तो वे भी आ पहुंचे। कुछ पत्रकारों ने उस अध्यापिका का साक्षात्कार लिया। उन्होंने पूछा, "एक अध्यापक के रूप में आपके सफल होने का रहस्य क्या है?"

अध्यापिका ने उत्तर दिया, "जब मैं अपने चारों ओर आज के युवा अध्यापकों को देखती हूं, जिन्होंने बच्चों को पढ़ाने की ट्रेनिंग ली है और बीएड किया है, तो पाती हूं कि वे प्रशिक्षित हैं और पढ़ाने की बारीकियों पर ध्यान दे सकते हैं, वे बच्चों को सचमुच कुछ सिखा सकते हैं। पर पीछे देखती हूं तो महसूस करती हूं कि जब मैंने पढ़ाना शुरू किया, तब मेरे पास देने के लिए सिर्फ प्यार था। उस अध्यापिका के इस सादे से वाक्य में, हमें सभी युगों के सतगुरुओं की सफलता का रहस्य मिलता है। इस कहानी की अध्यापिका के अंदर, जीवन को बदल देने की शक्ति थी। उन्होंने ऐसे छात्रों को पढ़ाया जिनमें सदाचार की कमी थी और उनको सदाचारी व्यक्तियों में बदल दिया। यही काम एक सतगुरू करते हैं। वे काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से भरे दुखी मनुष्यों को अपनाते हैं और उनको ऐसे इन्सानों में बदल देते हैं, जो अहिंसा, पवित्रता, नम्रता, सचाई और प्रेम से भरे हों। वे ऐसा कैसे करते हैं? वे यह सब दिव्य-प्रेम की शक्तियों से करते हैं।

अगर हमें कठोरता पूर्वक आदेश दे कर यह कहा जाए कि क्या करना है, तो शायद हम में से कुछ ही व्यक्ति उसका पालन करेंगे। पर अगर हम किसी से प्रेम करते हैं और जानते हैं कि वह भी हमसे प्रेम करता है, तो हम उसके आदेश सुनते हैं, उसका आदर करते हैं। माता-पिता के प्रेम के द्वारा एक बच्चा बोलना और चलना सीखता है। एक अध्यापक के प्रेम के द्वारा बच्चा पढ़ना-लिखना सीखता है। एक प्रशिक्षक के प्रेम के द्वारा हम कोई हुनर सीखते हैं। एक आध्यात्मिक गुरु के दिव्य-प्रेम से हम स्वयं भी आध्यात्मिक बन जाते हैं। हम महान संतों के जीवन में देख चुके हैं कि वे कितने दयावान थे। इसीलिए जो भी उनसे मिले, उनके जीवन को उन्होंने सकारात्मक रूप से बदल दिया। प्रेम में सर्वाधिक रूपांतरकारी शक्ति होती है।

राजभाषा के रूप में हिंदी का विकास

सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए 1976 में राजभाषा नियम बनाया गया था जो कि एक महत्वपूर्ण कदम था, इससे हिन्दी के प्रयोग में काफी सहायता मिली है। इस नियम की वर्तमान में महत्वपूर्ण व्यवस्थाएं इस प्रकार है:

केंद्र सरकार के कार्यालयों के 'क' क्षेत्र के लिए राज्य व संघ राज्य क्षेत्र (बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य, छत्तीसगढ़, उत्तरांचल, झारखण्ड) को ऐसे राज्यों में स्थित किसी अन्य कार्यालय या व्यक्ति को भेजे जाने वाले पत्र आदि हिन्दी में भेजे जाएंगे। यदि किसी खास मामले में कोई पत्र अंग्रेजी में भेजा जाता है तो उसका हिन्दी अनुवाद भी साथ भेजा जाएगा।

केंद्र सरकार के कार्यालयों से 'ख' क्षेत्र के किसी राज्य व संघ राज्य क्षेत्र (पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र और चंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र) के प्रशासनों को भेजे जाने वाले पत्र आदि सामान्यत: हिन्दी में भेजे जाएंगे। यदि ऐसा कोई पत्र अंग्रेजी में भेजा जाता है तो उसका हिन्दी अनुवाद साथ भेजा जाएगा। इन राज्यों में रहने वाले किसी व्यक्ति को भेजे जाने वाले पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी, किसी भी भाषा में हो सकते हैं।

केंद्रीय सरकार के कार्यालयों से 'ग' क्षेत्र के किसी राज्य व संघ राज्य क्षेत्र ('क' और 'ख' क्षेत्र में शामिल न होने वाले सभी राज्य और संघ राज्य क्षेत्र) के किसी कार्यालय या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाएंगे। यदि ऐसा कोई पत्र हिन्दी में भेजा जाता है तो उसका अंग्रेजी अनुवाद साथ भेजा जाएगा।

केंद्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्र व्यवहार हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकता है किंतु केंद्र सरकार के किसी मंत्रालय/विभाग और 'क' क्षेत्र में स्थिति संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों के बीच होने वाला पत्र व्यवहार सरकार द्वारा निर्धारित अनुपात में हिन्दी में होगा।

हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर अनिवार्य रूप से हिन्दी में ही दिए जाएंगे। हिन्दी में लेख या हिन्दी में हस्ताक्षर किए गए आवेदनों या अभ्यावेदनों के उत्तर भी हिन्दी में दिए जाएंगे।

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग किया जाएगा और इसे सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्ति की होगी।

केंद्रीय सरकार का कोई कर्मचारी फाइलों में हिन्दी या अंग्रेजी में टिप्पणी या मसौदे लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में भी प्रस्तुत करें।

केंद्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और अन्य प्रक्रिया साहित्य हिन्दी और अंग्रेजी, दोनों में द्विभाषिक रूप में तैयार और प्रकाशित किए जाएंगे। सभी फार्मों और रजिस्टरों के शीर्ष, नामपट्ट,

स्टेशनरी आदि की अन्य मदें भी हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में होनी चाहिए।

प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह दायित्व होगा कि वह राजभाषा अधिनियम और उसके अधीन बने नियमों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित करें।

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों पर है। इस नीति के समन्वय का कार्य राजभाषा विभाग करता है। यह विभाग समन्वय के लिए वार्षिक कार्यक्रम को जारी करने के अलावा कई प्रकार की समितियों का गठन करके यह कार्य कर रहा है, जिनका विवरण इस प्रकार है:

केंद्रीय हिन्दी समिति: हिन्दी के विकास और प्रसार तथा सरकारी कामकाज में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग के संबंध में भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों द्वारा कार्यान्वित किए जा रहे कार्यक्रमों का समन्वय करने और नीति संबंधी दिशा-निर्देश देने वाली यह सर्वोच्च समिति है जिसके अध्यक्ष प्रधानमंत्री होते हैं।

हिन्दी सलाहकार समिति: सरकार के निर्णय के अनुसार राजभाषा नीति का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने और इस संबंध में आवश्यक सलाह देने के लिए जनता के साथ अधिक संपर्क में आने वाले विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों में हिन्दी सलाहकार समितियां गठित की गई हैं। इस निर्णय के अनुसार कई मंत्रालयों में उनके मंत्रियों की अध्यक्षता में हिन्दी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है। इन समितियों में संसद सदस्य तथा हिन्दी के विशिष्ट विद्वानों के अतिरिक्त मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी शामिल होते हैं जो अपने मंत्रालय में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए आवश्यक विचार-विमर्श करके निर्णय लेते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति: केंद्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों की संख्या (चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को छोड़कर) 25 या इससे अधिक है, वहाँ राजभाषा कार्यान्वयन समितियां बनाई गई हैं।

केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति: मंत्रालयों व विभागों की राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के अध्यक्षों को मिला कर एक केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति बनाई गई है, जो उनकी समस्याओं पर आंतरिक रूप से विचार करके उनका समाधान ढूँढती है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति: 1976 में लिए गए एक निर्णय के अनुसार ऐसे कई नगरों में जहाँ 10 या इससे अधिक केंद्रीय कार्यालय है, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है।

उपरोक्त प्रयासों के फलस्वरूप भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है। इसी प्रकार उनके अधीनस्थ कार्यालयों में भी हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है। राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अनुसार निम्नलिखित कागजपत्रों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग अनिवार्य है:- संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें, सरकारी कागजपत्र, संविदाएं, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञापत्र, टेंडर नोटिस, टेंडर फार्म। अधिकतर मंत्रालय/विभाग/उपक्रम धारा 3(3) का अनुपालन कर रहे हैं और हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर भी हिन्दी में दे रहे हैं।

इस तरह राजभाषा के रूप में हिन्दी के विकास, प्रचार और प्रयोग में काफी वृद्धि हुई है, परन्तु हम अभी भी निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सके हैं क्योंकि जो सरकारी कर्मचारी हिन्दी जानते हैं, वे भी द्विभाषिक रूप में कार्य करने की छूट होने के कारण हिन्दी के बजाय अंग्रेजी में काम करना ज्यादा पसंद करते हैं, क्योंकि एक तो वे पहले से अंग्रेजी में काम करने के आदि

रहे हैं, दूसरे हिन्दी में काम करने में संकोच करते हैं। कर्मचारियों की इसी हीनता और संकोच की भावना सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के मार्ग में बहुत बड़ी बाधा है। कर्मचारियों की हीन भावना और हिंदी में काम करने की झिझक को दूर करने के लिए लगभग सभी कार्यालयों द्वारा हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी का प्रयोग करने के लिए पहले जितने यांत्रिक साधन और सुविधाएं उपलब्ध थी, वे हिन्दी में सुलभ नहीं थी जिसकी वजह से विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोग अपेक्षित रूप में नहीं हो पा रहा था, परन्तु अब हिंदी में काम करने की पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध हैं जिनकी मदद से हम आसानी से हिंदी में काम कर सकते हैं। हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा उपयुक्त वातावरण न होने की है। प्रायः अधिकतर कर्मचारी हिंदी का काम करने की जिम्मेदारी दूसरों पर डाल देते हैं। इसके बावजूद विविध प्रयासों के परिणामस्वरूप हिन्दी का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है।

भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/ उपक्रमों द्वारा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के भरसक प्रयास किये जा रहे हैं। हिन्दी में सर्वाधिक काम करने वाले मंत्रालयों व विभागों को शील्डें देने की व्यवस्था की गई है। राजभाषा विभाग अपने विभिन्न प्रकाशनों के माध्यम से राजभाषा नीति, राजभाषा अधि नियम तथा राजभाषा नियमों की जानकारी देने का पूरा प्रयास कर रहा है। विभिन्न मंत्रालयों की हिन्दी सलाहकार समितियां तथा राजभाषा कार्यान्वयन समितियां हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए आवश्यक कदम उठा रही है। हिन्दी कार्यशालाओं के आयोजन से भी कर्मचारियों की झिझक दूर करके उन्हें हिन्दी में काम करने के लिए प्रोत्साहन दिया जा रहा है। कार्यालयों में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। सभी मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों द्वारा हिन्दी में अधिक से अधिक काम करने का वातावरण बनाने के हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। हमारी मंजिल कुछ दूर अवश्य है, किंतु आशा है कि आप सभी के सहयोग से हम शीघ्र ही अपनी मंजिल अर्थात् लक्ष्य तक अवश्य पहुंचेंगे।

–दलीप कुमार सेठी

प्रबन्धक (रा.भा.)

पर्यावरण का शोषण नहीं, बल्कि पोषण करें

आयुधौम ऋषि अपने आश्रम के बच्चों को हमेशा यह बताया करते थे कि इस पृथ्वी पर कोई भी वस्तु, जीव या पौधा निरर्थक नहीं है। सभी हमारे कुछ न कुछ काम आते हैं। उनको बिना किसी कारण के नष्ट नहीं करना चाहिए।

एक दिन उन्होंने अपने शिष्यों से कहा कि सामने वाले खेत में जाओ और जो भी पौधा निरर्थक हो उसे उखाड़ कर ले आओ। सभी शिष्य कोई न कोई पौधा ले आए, किंतु आरुणि कोई पौधा नहीं लाया। साथी उसकी हंसी उड़ाने लगे। तब आयुधौम ने आरुणि से पूछा कि क्या तुम्हें कोई पौधा नहीं मिला? आरुणि ने कहा, कोई पौधा निरर्थक नहीं दिखाई दिया। किसी में औषधीय गुण थे, तो किसी में प्रकृति संरक्षण के। आयुधौम प्रसन्न हो गए, कम से कम आरुणि ने मेरी शिक्षा का मर्म समझा।

कथा का भाव यह है कि प्रकृति का संरक्षण केवल प्रवचनों और भाषणों से नहीं होगा। उनको जीवन में अमल में लाने की जरूरत है। हमें प्रकृति का हर संभव संरक्षण करना चाहिए, क्योंकि वही हमारा पोषण करती है। प्रकृति का शोषण न हो, बल्कि पोषण हो।

इसके लिए सबसे पहले हमें संग्रह की वृत्ति का त्याग करना चाहिए। यदि हमारा काम एक लोटे पानी से चल सकता है, तो वहां बाल्टी भर पानी नहीं बहाना चाहिए। हमें मधुमक्खियों से प्रेरणा लेनी चाहिए। वे फूलों से इस प्रकार पराग ग्रहण करती हैं कि फूल को उनसे कोई नुकसान नहीं होता। उसके सौंदर्य में भी कोई कमी नहीं आती।

मनुष्य को गाय-भैंस- बकरी आदि जैसे पशुओं से भी प्रेरणा लेनी चाहिए। वे प्रकृति से बहुत थोड़ा लेते हैं। लेकिन बदले में मनुष्य और प्रकृति उनसे बहुत कुछ प्राप्त करते हैं। जिस समय पर्यावरण की कोई समस्या नहीं थी, उस समय हमारे ऋषियों ने गहरा चिंतन किया और प्रकृति विज्ञान को धर्म के साथ जोड़ने का प्रयास किया।

उदाहरण के लिए पीपल और वट में जीवनदायिनी शक्ति एवं तुलसी में रोग निरोधक शक्ति होने के कारण इस प्रकार की वनस्पतियों को पूजनीय माना। कुछ विशेष कारणों से सांप, बिच्छू आदि अनेक कीटों को भी पूजनीय माना। पहले जिन नदियों से जल प्राप्त होता था, उन्हें मां की तरह पूजते थे।

हमारे पुराणों में सागर मंथन की कथा आती है। पानी में विष भी है और अमृत भी। इसलिए पानी की शुद्धता के लिए कल्याणकारी कदम उठाया जाना चाहिए। जल का परिशोधन करके शुद्ध करना चाहिए। यही सागर मंथन का अर्थ है।

भारत का पारंपरिक ज्ञान प्रकृति की छाया में ही विकसित हुआ है। यहां तो त्रियक योनि के जीव- जंतु भी वंदनीय हैं। जैसे भगवान शंकर के गले में सांप, सरस्वती का वाहन हंस, गणेश की सवारी चूहा, कार्तिकेय का वाहन मोर, लक्ष्मी का वाहन उल्लू, मां दुर्गा का वाहन शेर आदि। यह हमारी सभ्यता में बसे प्रकृति प्रेम का ही प्रतीक है।

हमें पर्यावरण का सही अर्थ भी समझना चाहिए। हमारे चारों ओर प्रकृति का जो भी रूप दिखाई देता है या

महसूस होता है, वह सब पर्यावरण का ही अंग है। इनमें से किसी का भी अशुद्ध होना पर्यावरण का प्रदूषण है। लेकिन आधुनिक प्रदूषण की समस्या नए विज्ञान की देन है। यह उद्योग- धंधों से पनपी है।

जब तक शहर नहीं बने थे, प्रदूषण का नामोनिशान नहीं था। प्रकृति में संतुलन बना हुआ था। हवा साफ थी, धरती उपजाऊ थी। आज भी गांवों में शहरों की तुलना में प्रदूषण कम है, क्योंकि वहां रहने वाले लोगों का जीवन सरल है, उपभोक्तावाद नहीं है। शहरों में प्रदूषण ज्यादा है। अब शहर खत्म तो नहीं किए जा सकते, लेकिन जीने का सलीका जरूर बदला जा सकता है। चमक-दमक के लालच पर थोड़ा अंकुश रखा जा सकता है। इससे भी पर्यावरण का काफी हद तक बचाव हो सकता है।

– शारदा रानी
वरि. सहायक

चिंता

एक राजा की पुत्री के मन में वैराग्य की भावनाएं थीं। जब राजकुमारी विवाह योग्य हुई तो राजा को उसके विवाह के लिए योग्य वर नहीं मिल पा रहा था।

राजा ने पुत्री की भावनाओं को समझते हुए बहुत सोच-विचार करके उसका विवाह एक गरीब सन्यासी से करवा दिया। राजा ने सोचा कि एक सन्यासी ही राजकुमारी की भावनाओं की कद्र कर सकता है।

विवाह के बाद राजकुमारी खुशी-खुशी संयासी की कुटिया में रहने आ गई। कुटिया की सफाई करते समय राजकुमारी को एक बर्तन में दो सूखी रोटियां दिखाई दीं। उसने अपने संयासी पति से पूछा कि रोटिया यहां क्यों रखी हैं? संयासी ने जवाब दिया कि ये रोटियां कल के लिए रखी हैं, अगर कल खाना नहीं मिला तो हम एक-एक रोटी खा लेंगे। संयासी का ये जवाब सुनकर राजकुमारी हंस पड़ी। राजकुमारी नें कहा कि मेरे पिता ने मेरा विवाह आपके साथ इसलिए किया था, क्योंकि उन्हें ये लगता है कि आप भी मेरी ही तरह वैरागी हैं, आप तो सिर्फ भक्ति करते हैं और कल की चिंता करते हैं।

सच्चा भक्त वहीं है जो कल की चिंता नहीं करता और भगवान पर पूरा भरोसा करता है। अगले दिन की चिंता तो जानवर भी नहीं करते हैं, हम तो इंसान हैं। अगर भगवान चाहेगा तो हमें खाना मिल जाएगा और नहीं मिलेगा तो रातभर आनंद से प्रार्थना करेंगे।

ये बातें सुनकर संयासी की आंखें खुल गईं। उसे समझ आ गया कि उसकी पत्नी ही असली संयासी है। उसने राजकुमारी से कहा कि आप तो राजा की बेटी हैं, राजमहल छोड़कर मेरी छोटी सी कुटिया में आई हैं, जबकि मैं तो पहले से ही एक फकीर हूँ, फिर भी मुझे कल की चिंता सता रही थी। सिर्फ कहने से ही कोई संयासी नहीं होता, संयास को जीवन में उतारना पड़ता है। आपने मुझे वैराग्य का महत्व समझा दिया।

शिक्षा : अगर हम भगवान की भक्ति करते हैं तो विश्वास भी होना चाहिए कि भगवान हर समय हमारे साथ है। उसको (भगवान) हमारी चिंता हमसे ज्यादा रहती है।

कभी आप बहुत परेशान हों, कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा हो तो आप आंखें बंद करके विश्वास के साथ पुकारें, सच मानिये थोड़ी देर में आपकी समस्या का समाधान मिल जायेगा।

वृक्षारोपण

श्री पंकज कुमार, सचिव, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय

श्री आर.के. अग्रवाल, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस व एनपीसीसी

श्री अनुपम चन्द्रा, मुख्य सतर्कता अधिकारी, वाप्कोस व एनपीसीसी

श्री पंकज कपूर, निदेशक (वित्त), वाप्कोस व एनपीसीसी

स्वच्छता गतिविधियां

भोपाल कार्यालय

पंचकुला कार्यालय

राजभाषा हिंदी में काम करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

- सरल हिन्दी का प्रयोग करें। लच्छेदार, साहित्यक भाषा की कार्यालय में कोई उपयोगिता नहीं है। ऐसी भाषा का प्रयोग करें, जिसे सभी आसानी से समझ सकें।
- जहां भी आपको लगे कि हिन्दी शब्द को समझने व पढ़ने वालों को कठिनाई हो सकती है, वहां मूल अंग्रेजी शब्दों को ज्यों का त्यों देवनागरी लिपि में अथवा अंग्रेजी में लिख दें।
- अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों का बेहिचक प्रयोग करें।
- आधुनिक यंत्रों, कल-पुर्जों या तकनीकी विषयों आदि के लिए मूल अंग्रेजी के शब्द ही अपना लिए गए हैं इसलिए उन्हें देवनागरी लिपि में लिखे। जैसे टाइपराइटर, कम्प्यूटर आदि।
- लम्बे, उलझे हुए वाक्यों के स्थान पर छोटे-छोटे और सरल वाक्यों को लिखने का अभ्यास करें।
- अंग्रेजी में टिप्पणी, प्रारूप या पत्र लिखकर फिर उसका हिन्दी में अनुवाद करने के स्थान पर मूल रूप से हिन्दी में लिखने का अभ्यास करें। ऐसा करने से ही भाषा सरल, स्वाभाविक और बोधगम्य (कांम्प्रिहैंसिव) होगी।

ISO 9001:2015

वाप्कोस लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
जल शक्ति मंत्रालय
(A Government of India Undertaking)
Ministry of Jal Shakti

पंजीकृत कार्यालय : 5वां तल, "कैलाश", 26, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली - 110 001
दूरभाष : +91-11-23313131, 23313881 फैक्स : +91-11-23313134, 23314924 ई-मेल: ho@wapcos.co.in

निगमित कार्यालय : 76-सी, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-18, गुरूग्राम-122015, हरियाणा
दूरभाष : +91-124-2399428 फैक्स : +91-124-2397392 ई-मेल: mail@wapcos.co.in

ई-मेल : hindi@wapcos.co.in वेबसाईट : http://www.wapcos.co.in